CBSE Class 10 Hindi B 2026 Set 3 Question Paper with Solutions

General Instructions

(i) This booklet contains 66 questions, each provided with a complete, step-by-step solution.

(ii) It comprises 16 single-correct multiple-choice questions.

(iii) Attempt each question on your own before reviewing the given solution.

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

विश्व में जल-संकट बड़ी समस्या बन चुकी है। इससे हर साल करोड़ों लोग प्रभावित होते हैं। गर्मियों में यह संकट और बढ़ जाता है। गाँवों से महानगरों तक पानी के लिए त्राहि-त्राहि मचने लगती है। यह संकट न केवल ग्रामीण और शहरी आबादी के लिए गंभीर चुनौती है बल्कि कृषि पर भी इसका व्यापक प्रभाव पड़ रहा है। लगातार गिरता भू-जल स्तर, जल संसाधनों की बर्बादी, बढ़ती जनसंख्या और जलवायु परिवर्तन इस संकट को और विकराल बना रहे हैं। अगर समय रहते उचित कदम नहीं उठाए गए, तो भविष्य में स्थिति और गंभीर हो सकती है।

जल-संकट गहराने के कई कारण हैं। हमें पता है कि पानी सीमित है, फिर भी उसे बूँद-बूँद बचाने के बजाए हम उसे व्यर्थ बहा रहे हैं। विश्व की तेजी से बढ़ती आबादी के कारण पानी की माँग बढ़ती जा रही है लेकिन जल संसाधनों का उतनी ही अधिक तेजी से क्षय हो रहा है। कृषि, उद्योग और घरेलू उपयोग के लिए भू-जल का अत्यधिक दोहन किया जा रहा है, जिससे भू-जल का स्तर गिरता जा रहा है। नदियों, झीलों और भू-जल में औद्योगिक कचरे, रसायनों और प्लास्टिक के बढ़ते स्तर के कारण पीने योग्य पानी की लगातार कमी आ रही है।

Correct Answer: —

2. निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यान से पढ़िए और उचित विकल्प का चयन कर लिखिए :

कथन : भूमिगत जल के प्रदूषण का स्तर लगातार बढ़ा है।
कारण : जल के विविध स्रोतों को संरक्षित एवं सुरक्षित रखने के हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं।

(A) कथन और कारण दोनों गलत हैं।

(B) कथन सही है, किंतु कारण गलत है।

(C) कथन गलत है, किंतु कारण सही है।

(D) कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

Correct Answer: (B) कथन सही है, किंतु कारण गलत है।

Solution:

Concept:

- कथन-कारण वाले प्रश्न में पहले दोनों वाक्यों को अलग-अलग जाँचा जाता है, उसके बाद ही दोनों के बीच का संबंध देखा जाता है।
- दोनों की जाँच का आधार केवल गद्यांश होना चाहिए, अपना सामान्य ज्ञान नहीं।

Step 1: कथन की जाँच कीजिए।
गद्यांश में लिखा है कि नदियों, झीलों और भू-जल में औद्योगिक कचरे, रसायनों और प्लास्टिक का स्तर बढ़ रहा है। भू-जल का अर्थ ही भूमिगत जल है।
अतः कथन **सही** है।

Step 2: कारण की जाँच कीजिए।
कारण कहता है कि जल-स्रोतों को संरक्षित रखने के हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं। गद्यांश इसके ठीक विपरीत बात कहता है, कि हम पानी को बचाने के बजाए व्यर्थ बहा रहे हैं और भू-जल का अत्यधिक दोहन कर रहे हैं।

अतः कारण **गलत** है।

Step 3: दोनों के संबंध पर विचार कीजिए।
यदि संरक्षण के सचमुच हर संभव प्रयास हो रहे होते, तो प्रदूषण घटता, बढ़ता नहीं। इसलिए कारण, कथन की व्याख्या तो दूर, उसका खंडन करता है।

Step 4: सही विकल्प चुनिए।
कथन सही और कारण गलत, अर्थात विकल्प (B)।

Final Answer: (B) कथन सही है, किंतु कारण गलत है।

Quick Tip: पहले कारण वाले वाक्य को गद्यांश से मिलाइए। गद्यांश पानी बचाने की बात करता है या पानी बर्बाद करने की, यही देखने से आधे विकल्प कट जाएँगे।

3. विश्व में पानी की माँग दिनोंदिन क्यों बढ़ रही है?

(A) जलवायु परिवर्तन के कारण

(B) भू-जल के गिरते स्तर के कारण

(C) कृषि योग्य भूमि के विस्तार के कारण

(D) बढ़ती हुई आबादी के कारण

Correct Answer: (D) बढ़ती हुई आबादी के कारण

Solution:

Concept:

- माँग का सीधा संबंध उपभोक्ताओं की संख्या से होता है, अर्थात जितने अधिक लोग, उतनी अधिक माँग।
- प्रश्न विशेष रूप से माँग बढ़ने का कारण पूछ रहा है, आपूर्ति घटने का नहीं।

Step 1: गद्यांश की संबंधित पंक्ति खोजिए।
गद्यांश में लिखा है कि विश्व की तेजी से बढ़ती आबादी के कारण पानी की माँग बढ़ती जा रही है।
उत्तर सीधे गद्यांश में दिया हुआ है।

Step 2: विकल्प (B) की जाँच कीजिए।
भू-जल का गिरता स्तर पानी की *उपलब्धता* कम करता है, माँग नहीं बढ़ाता। यह संकट का दूसरा पक्ष है, इसलिए यह उत्तर नहीं है।

Step 3: विकल्प (A) की जाँच कीजिए।
जलवायु परिवर्तन का उल्लेख गद्यांश में संकट को विकराल बनाने वाले कारकों में है, परंतु माँग बढ़ने के कारण के रूप में नहीं।

Step 4: विकल्प (C) की जाँच कीजिए।
कृषि योग्य भूमि के विस्तार की बात गद्यांश में कहीं नहीं है। गद्यांश कृषि पर जल-संकट के *प्रभाव* की बात करता है।

Final Answer: (D) बढ़ती हुई आबादी के कारण

Quick Tip: प्रश्न में माँग शब्द पर ध्यान दीजिए। जो विकल्प पानी की उपलब्धता घटाते हैं वे माँग बढ़ाने का कारण नहीं हो सकते।

4. जल-संकट गहराने के प्रमुख कारण नहीं हैं।

(A) लगातार गिरता भू-जल स्तर
(B) लगातार बढ़ती जनसंख्या
(C) जल स्रोतों का सुनियोजित उपयोग
(D) जल संरक्षण के अनुपयुक्त उपाय

Correct Answer: (C) जल स्रोतों का सुनियोजित उपयोग

Solution:

Concept:

- यह नकारात्मक प्रश्न है, अर्थात जो विकल्प कारण *नहीं* है वही उत्तर होगा।
- ऐसे प्रश्न में तीन विकल्प सही होते हैं और एक बेमेल होता है, इसलिए बेमेल विकल्प ढूँढ़ना है।

Step 1: विकल्प (A) की जाँच कीजिए।
गद्यांश में लगातार गिरते भू-जल स्तर को संकट विकराल बनाने वाले कारकों में गिनाया गया है। यह कारण है, उत्तर नहीं।

Step 2: विकल्प (B) की जाँच कीजिए।
बढ़ती जनसंख्या का भी गद्यांश में स्पष्ट उल्लेख है। यह भी कारण है।

Step 3: विकल्प (D) की जाँच कीजिए।
गद्यांश कहता है कि पानी को बूँद-बूँद बचाने के बजाए हम उसे व्यर्थ बहा रहे हैं, अर्थात संरक्षण के उपाय अनुपयुक्त हैं। यह भी कारण है।

Step 4: विकल्प (C) की जाँच कीजिए।
सुनियोजित उपयोग का अर्थ है सोच-समझकर, योजना बनाकर पानी का प्रयोग करना। यह तो संकट का *समाधान* है, कारण नहीं।
गद्यांश भी अत्यधिक दोहन की बात करता है, सुनियोजित उपयोग की नहीं।

Final Answer: (C) जल स्रोतों का सुनियोजित उपयोग

Quick Tip: प्रश्न में नहीं शब्द रेखांकित है। विकल्पों को दो भागों में बाँटिए, कौन समस्या बढ़ाता है और कौन घटाता है।

5. 'पानी को बूँद-बूँद बचाने के बजाए हम उसे व्यर्थ कर रहे हैं।' कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

Concept:

- आशय स्पष्ट करने का अर्थ है कथन को अपने शब्दों में खोलकर समझाना और उसके पीछे छिपी बात सामने लाना।
- यहाँ कथन में दो बातों की तुलना है, जो हमें करना चाहिए और जो हम वास्तव में कर रहे हैं।

Step 1: कथन का पहला भाग समझिए।
'बूँद-बूँद बचाना' एक मुहावरे जैसा प्रयोग है, जिसका अर्थ है पानी की एक-एक बूँद का मोल समझकर अत्यंत सावधानी से उसका उपयोग करना।

Step 2: कथन का दूसरा भाग समझिए।
'व्यर्थ करना' अर्थात बिना किसी उपयोग के पानी बहा देना, जैसे नल खुला छोड़ देना, टपकते नल की मरम्मत न कराना, वाहन धोने और आँगन धोने में पानी बहाना।

Step 3: दोनों भागों का विरोधाभास बताइए।
हम जानते हैं कि पृथ्वी पर पीने योग्य पानी सीमित है, फिर भी हमारा व्यवहार ठीक उलटा है। जानते हुए भी हम बचाते नहीं, बहाते हैं। यही कथन की मूल पीड़ा है।

Step 4: परिणाम बताते हुए बात पूरी कीजिए।
इसी लापरवाही से भू-जल का स्तर गिरता है और जल संसाधनों का क्षय होता है। यदि यही रवैया रहा तो भविष्य में स्थिति और गंभीर हो जाएगी।

Final Answer: इस कथन का आशय यह है कि पानी सीमित संसाधन है और

उसका एक-एक बूँद बचाया जाना चाहिए, परंतु हम यह जानते हुए भी उसे बिना सोचे-समझे बहाते रहते हैं। हमारी यही लापरवाही जल-संकट को और गहरा कर रही है।

Quick Tip: वाक्य में के बजाए शब्द पर ध्यान दीजिए। पहले बताइए कि क्या करना चाहिए, फिर उदाहरण देकर बताइए कि हम वास्तव में क्या कर रहे हैं।

6. पेय जल की उपलब्धता में निरंतर गिरावट क्यों आ रही है?

Correct Answer: —

Solution:

Concept:

- पेय जल का अर्थ है पीने योग्य जल। इसकी कमी दो तरह से होती है, या तो पानी कम हो जाए या जो है वह पीने लायक न रहे।
- गद्यांश में दोनों कारण दिए गए हैं, इसलिए उत्तर में दोनों आने चाहिए।

Step 1: पहला कारण, जल स्रोतों का प्रदूषित होना।
नदियों, झीलों और भू-जल में **औद्योगिक कचरे, रसायनों और प्लास्टिक** का स्तर लगातार बढ़ रहा है। इससे जो पानी उपलब्ध भी है, वह पीने योग्य नहीं रह जाता।

Step 2: दूसरा कारण, भू-जल का अत्यधिक दोहन।
कृषि, उद्योग और घरेलू उपयोग के लिए भू-जल इतना अधिक खींचा जा रहा है कि भू-जल का स्तर लगातार गिरता जा रहा है।

Step 3: तीसरा कारण, बढ़ती जनसंख्या।
विश्व की तेजी से बढ़ती आबादी के कारण पानी की माँग बढ़ रही है, जबकि जल संसाधनों का उतनी ही तेजी से क्षय हो रहा है। माँग और आपूर्ति का यह अंतर कमी

को और बढ़ा देता है।

Step 4: चौथा कारण, पानी की बर्बादी।
पानी सीमित होते हुए भी उसे बचाने के बजाय व्यर्थ बहाया जा रहा है, जिससे उपलब्ध जल और तेजी से घटता है।

Final Answer: पेय जल की उपलब्धता इसलिए घट रही है क्योंकि नदियों, झीलों और भू-जल में औद्योगिक कचरा, रसायन और प्लास्टिक मिलकर उसे दूषित कर रहे हैं, कृषि, उद्योग तथा घरेलू उपयोग के लिए भू-जल का अत्यधिक दोहन हो रहा है, बढ़ती आबादी से माँग बढ़ रही है और उपलब्ध पानी भी बर्बाद किया जा रहा है।

Quick Tip: दो तरह के कारण अलग-अलग लिखिए, एक वे जिनसे पानी की मात्रा घटती है और दूसरे वे जिनसे उपलब्ध पानी पीने लायक नहीं रह जाता।

7. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

फ्रैंकलिन का प्रसिद्ध कथन है – 'वक्त को बरबाद न करो क्योंकि जीवन इसी से बना है।' समय ही जीवन है। जो अवसरों और संभावनाओं से भरा हुआ है।

जो बुद्धिमानी से इसका उपयोग करते हैं, वे सफलता की नींव रखते हैं, जबकि समय को व्यर्थ करने वाले अधूरे कार्यों और अपूर्ण लक्ष्यों के साथ रह जाते हैं। शास्त्रों में कहा गया है, 'एक-एक पैसे को जोड़कर कोई धनी बनता है, और एक-एक क्षण का उपयोग करके कोई विद्वान।' समय वास्तव में सीमित संसाधन है। जब हम किसी एक चीज के लिए 'हाँ' कहते हैं, तो किसी दूसरी चीज के लिए 'ना' कह रहे होते हैं।

प्राचीन ज्ञान भी यही सिखाता है। अवसर को समय रहते पहचानो और उसका सदुपयोग करो। मानव जीवन एक दुर्लभ उपहार है। यही जीवन हमें विवेक देता है, जो लाभकारी और सुखद के बीच अंतर करने में सक्षम बनाता है। इसलिए हर क्षण का विवेकपूर्ण उपयोग आवश्यक है। जैसे विद्यार्थी परीक्षा के आने के ठीक पहले समय को अच्छी तरह समझकर पूरी निष्ठा से पढ़ाई करते हैं, वैसे ही हमें भी जीवन के हर क्षण को उद्देश्यपूर्ण बनाना चाहिए।

हम अकसर कहते हैं, 'काश मेरे पास और समय होता।' यह सोच हमें थकान और असंतोष की ओर ले जाती है। साथ ही, हम एक तरह की नकारात्मकता से घिर जाते हैं। सच यह है कि हम सबको समान 24 घंटे मिलते हैं। फ़र्क सिर्फ इस बात से पड़ता है कि हम उनका उपयोग कैसे करते हैं।

विद्वानों ने सिखाया कि सफलता उन्हीं को मिलती है, जो अपने समय को केवल सबसे महत्त्वपूर्ण कार्यों में निवेश करते हैं। प्रकृति हमें हर दिन समय का समान उपहार देती है। समय की कद्र कीजिए, घड़ी की सूइयों की फुसफुसाहट को सुनिए और उसके संकेतों को समझिए। जो लोग हर क्षण को सार्थक बनाते हैं, वे ही जीवन में संतोष और सफलता का सच्चा संतुलन पाते हैं।

Correct Answer: —

8. निम्नलिखित कथन और कारण पर विचार करते हुए उपयुक्त विकल्प चुनिए :

कथन : समय के सदुपयोग का सफलता से गहरा नाता है।
कारण : सफलता उन्हीं को मिलती है, जो अपने समय को सबसे महत्त्वपूर्ण कार्यों में निवेश करते हैं।

(A) कथन सही है, लेकिन कारण गलत है।

(B) कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

(C) कथन गलत है और कारण सही है।

(D) कथन और कारण दोनों गलत हैं।

Correct Answer: (B) कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

Solution:

Concept:

- कथन और कारण दोनों को पहले अलग-अलग जाँचिए, फिर देखिए कि क्या कारण, कथन का स्पष्टीकरण दे रहा है।
- यदि कारण यह बता दे कि कथन क्यों सच है, तो वही सही व्याख्या मानी जाती है।

Step 1: कथन की जाँच कीजिए।
गद्यांश कहता है कि जो बुद्धिमानी से समय का उपयोग करते हैं, वे सफलता की नींव रखते हैं, जबकि समय व्यर्थ करने वाले अधूरे कार्यों के साथ रह जाते हैं।
अतः कथन **सही** है।

Step 2: कारण की जाँच कीजिए।
गद्यांश के अंतिम भाग में विद्वानों का मत दिया है कि सफलता उन्हीं को मिलती है जो अपने समय को केवल सबसे महत्त्वपूर्ण कार्यों में निवेश करते हैं।

अतः कारण भी **सही** है।

Step 3: दोनों के बीच का संबंध देखिए।
कथन बताता है *क्या* होता है, कि सदुपयोग और सफलता जुड़े हुए हैं। कारण बताता है *कैसे* जुड़े हैं, कि समय को महत्त्वपूर्ण कार्यों में लगाने से सफलता मिलती है।
इस प्रकार कारण, कथन को खोलकर समझा रहा है।

Step 4: सही विकल्प चुनिए।
दोनों सही और कारण कथन की सही व्याख्या करता है, अर्थात विकल्प (B)।

Final Answer: (B) कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

Quick Tip: दोनों वाक्यों को क्योंकि शब्द से जोड़कर पढ़िए। यदि वाक्य सहज बन जाए तो कारण, कथन की व्याख्या कर रहा है।

9. गद्यांश के आधार पर लिखिए कि जो व्यक्ति समय का सदुपयोग करते हैं, उनका जीवन कैसा होता है?

(I) सफल
(II) व्यस्त
(III) सार्थक
(IV) अनियमित

(A) केवल विकल्प (I) सही है।
(B) (II) और (III) सही हैं।
(C) (I), (II) और (III) सही हैं।
(D) (I) और (III) सही हैं।

Correct Answer: (D) (I) और (III) सही हैं।

Solution:

Concept:

- इस प्रकार के प्रश्न में हर एक कथन को अलग-अलग गद्यांश से मिलाना पड़ता है, फिर वह विकल्प चुनना होता है जिसमें ठीक वही कथन हों जो सही निकले।
- जो बात गद्यांश में नहीं है, उसे अपनी ओर से सही नहीं मान लेना चाहिए।

Step 1: कथन (I) 'सफल' की जाँच कीजिए।
गद्यांश कहता है कि जो बुद्धिमानी से समय का उपयोग करते हैं वे सफलता की नींव रखते हैं, और यह भी कि ऐसे लोग संतोष और सफलता का सच्चा संतुलन पाते हैं।
अतः (I) **सही** है।

Step 2: कथन (III) 'सार्थक' की जाँच कीजिए।
गद्यांश के अंत में लिखा है कि जो लोग हर क्षण को सार्थक बनाते हैं, वे ही जीवन में संतोष और सफलता पाते हैं। साथ ही हर क्षण को उद्देश्यपूर्ण बनाने की बात भी कही गई है।
अतः (III) भी **सही** है।

Step 3: कथन (II) 'व्यस्त' की जाँच कीजिए।
गद्यांश कहीं यह नहीं कहता कि समय का सदुपयोग करने वाले व्यस्त रहते हैं। व्यस्त होना और समय का सदुपयोग करना एक बात नहीं है। कोई व्यक्ति व्यस्त रहकर भी समय व्यर्थ कर सकता है।
अतः (II) **गलत** है।

Step 4: कथन (IV) 'अनियमित' की जाँच कीजिए।
अनियमित का अर्थ है बिना नियम के, अव्यवस्थित। यह तो समय व्यर्थ करने वालों का लक्षण है, सदुपयोग करने वालों का नहीं।
अतः (IV) भी **गलत** है।

Step 5: सही विकल्प चुनिए।

केवल (I) और (III) सही हैं, जो विकल्प (D) है।

Final Answer: (D) (I) और (III) सही हैं।

Quick Tip: हर कथन को अलग-अलग गद्यांश से मिलाइए। ध्यान रखिए कि व्यस्त रहना और समय का सदुपयोग करना एक बात नहीं है।

10. 'काश मेरे पास और समय होता।' ऐसी सोच किस प्रकार के व्यक्तियों की होती है?

(A) अकर्मण्य और आलसी लोगों की

(B) भाग्यवादी लोगों की

(C) समय की कद्र करने वालों की

(D) परिश्रमी लोगों की

Correct Answer: (A) अकर्मण्य और आलसी लोगों की

Solution:

Concept:

- 'काश' शब्द पछतावे और बहाने का सूचक है। यह उन लोगों की भाषा है जो काम पूरा नहीं कर पाए और उसका दोष समय पर डाल देते हैं।
- गद्यांश इसी सोच को नकारात्मक बताता है।

Step 1: गद्यांश में इस सोच का परिणाम देखिए।
गद्यांश कहता है कि यह सोच हमें थकान और असंतोष की ओर ले जाती है और हम एक तरह की नकारात्मकता से घिर जाते हैं।
अर्थात यह सोच किसी परिश्रमी व्यक्ति की नहीं हो सकती।

Step 2: गद्यांश का उत्तर भी देखिए।

गद्यांश तुरंत कहता है कि सच यह है कि हम सबको समान 24 घंटे मिलते हैं, फ़र्क केवल इस बात से पड़ता है कि हम उनका उपयोग कैसे करते हैं।
अर्थात समय कम नहीं है, उपयोग करने वाला कमजोर है।

Step 3: विकल्प (C) और (D) की जाँच कीजिए।
समय की कद्र करने वाले और परिश्रमी लोग उपलब्ध समय में ही अपना काम निकाल लेते हैं। वे समय की कमी का बहाना नहीं बनाते। अतः ये दोनों गलत हैं।

Step 4: विकल्प (B) और (A) में निर्णय कीजिए।
भाग्यवादी व्यक्ति सब कुछ भाग्य पर छोड़ता है, वह समय की कमी की शिकायत नहीं करता। यह शिकायत तो उसकी होती है जो काम टालता रहा और अब बहाना खोज रहा है।
ऐसे व्यक्ति को ही **अकर्मण्य और आलसी** कहा जाता है।

Final Answer: (A) अकर्मण्य और आलसी लोगों की

Quick Tip: सोचिए कि यह शिकायत कौन कभी नहीं करेगा। परिश्रमी और समय की कद्र करने वाला व्यक्ति समय की कमी का बहाना नहीं बनाता।

11. समय को व्यर्थ गँवाने के क्या परिणाम होते हैं?

Correct Answer: —

Solution:

Concept:

- परिणाम पूछे जाने पर वे बातें लिखनी चाहिए जो समय बरबाद करने के *बाद* होती हैं, न कि बरबाद करने के कारण।
- गद्यांश में ऐसे कई परिणाम बिखरे हुए हैं, उन्हें एकत्र करना है।

Step 1: पहला परिणाम, कार्य अधूरे रह जाते हैं।
गद्यांश कहता है कि समय को व्यर्थ करने वाले **अधूरे कार्यों और अपूर्ण लक्ष्यों** के साथ रह जाते हैं। जो काम आरंभ हुआ वह पूरा नहीं होता और जो लक्ष्य बनाया था वह हाथ नहीं आता।

Step 2: दूसरा परिणाम, अवसर हाथ से निकल जाते हैं।
गद्यांश के अनुसार समय अवसरों और संभावनाओं से भरा हुआ है, और अवसर को समय रहते पहचानकर उसका सदुपयोग करना चाहिए। समय गँवा देने पर वह अवसर लौटकर नहीं आता।

Step 3: तीसरा परिणाम, थकान और असंतोष।
बाद में व्यक्ति कहता है कि काश मेरे पास और समय होता। गद्यांश के अनुसार यह सोच उसे **थकान और असंतोष** की ओर ले जाती है और वह एक तरह की नकारात्मकता से घिर जाता है।

Step 4: चौथा परिणाम, सफलता से वंचित रह जाना।
सफलता उन्हीं को मिलती है जो अपने समय को सबसे महत्त्वपूर्ण कार्यों में निवेश करते हैं। समय व्यर्थ करने वाला इस निवेश से चूक जाता है, इसलिए जीवन में संतोष और सफलता का संतुलन नहीं पा सकता।

Final Answer: समय व्यर्थ गँवाने पर कार्य अधूरे और लक्ष्य अपूर्ण रह जाते हैं, अच्छे अवसर हाथ से निकल जाते हैं, बाद में पछतावे से थकान, असंतोष और नकारात्मकता घेर लेती है, और व्यक्ति जीवन में सफलता तथा संतोष दोनों से वंचित रह जाता है।

Quick Tip: वे बातें लिखिए जो समय बरबाद करने के बाद होती हैं, जैसे काम अधूरे रहना, अवसर निकल जाना, और बाद में थकान तथा असंतोष होना।

12. हर क्षण का विवेकपूर्ण उपयोग क्यों आवश्यक है?

Correct Answer: —

Solution:

Concept:

- विवेक का अर्थ है सही और गलत, लाभकारी और केवल सुखद के बीच अंतर करने की समझ।
- प्रश्न 'क्यों' पूछता है, इसलिए उत्तर में कारण देने होंगे, केवल विवरण नहीं।

Step 1: पहला कारण, समय सीमित संसाधन है।
गद्यांश कहता है कि समय वास्तव में **सीमित संसाधन** है। जो बीत गया वह लौटता नहीं, इसलिए उसे सोच-समझकर ही खर्च किया जा सकता है।

Step 2: दूसरा कारण, हर 'हाँ' के साथ एक 'ना' जुड़ी होती है।
गद्यांश के अनुसार जब हम किसी एक चीज के लिए हाँ कहते हैं, तो किसी दूसरी चीज के लिए ना कह रहे होते हैं। अर्थात हर चुनाव के साथ कुछ छूट जाता है, इसलिए चुनाव विवेक से करना पड़ता है।

Step 3: तीसरा कारण, लाभकारी और सुखद में अंतर।
मानव जीवन एक दुर्लभ उपहार है और यही जीवन हमें विवेक देता है, जो **लाभकारी और सुखद के बीच अंतर** करने में सक्षम बनाता है। जो तत्काल सुखद लगता है, वह दूरगामी दृष्टि से हानिकारक हो सकता है।

Step 4: चौथा कारण, यही सफलता और संतोष का मार्ग है।
जैसे विद्यार्थी परीक्षा से ठीक पहले समय को समझकर पूरी निष्ठा से पढ़ाई करते हैं, वैसे ही जीवन के हर क्षण को उद्देश्यपूर्ण बनाना चाहिए। जो हर क्षण को सार्थक बनाते हैं, वे ही संतोष और सफलता का सच्चा संतुलन पाते हैं।

Final Answer: हर क्षण का विवेकपूर्ण उपयोग इसलिए आवश्यक है क्योंकि

समय सीमित है और बीता हुआ क्षण लौटता नहीं, एक काम चुनने का अर्थ दूसरा छोड़ देना होता है, विवेक ही लाभकारी और केवल सुखद में अंतर करा सकता है, और इसी से जीवन में सफलता तथा संतोष का संतुलन मिलता है।

Quick Tip: समय को सीमित पूँजी मानकर सोचिए। गद्यांश की वह पंक्ति याद रखिए जिसमें एक चीज के लिए हाँ कहने का अर्थ दूसरी के लिए ना कहना बताया गया है।

13. दूसरों की सहायता करने वाले आप महान हैं। – वाक्य में से सर्वनाम पदबंध छाँटकर लिखिए।

Correct Answer: –

Solution:

Concept:

- पदबंध उन कई पदों का समूह है जो मिलकर एक ही पद का काम करते हैं।
- पदबंध का भेद उसके **शीर्ष पद** से तय होता है, अर्थात समूह का अंतिम और मुख्य शब्द जिस श्रेणी का होगा, पदबंध भी उसी श्रेणी का कहलाएगा।

Step 1: वाक्य में सर्वनाम खोजिए।
वाक्य है – दूसरों की सहायता करने वाले **आप** महान हैं।
यहाँ **आप** सर्वनाम है, क्योंकि वह किसी नाम के स्थान पर आया है।

Step 2: देखिए कि उस सर्वनाम के साथ कौन-से पद जुड़े हैं।
'आप' से पहले आए शब्द 'दूसरों की सहायता करने वाले' उसी की विशेषता बता रहे हैं, अर्थात वे बताते हैं कि किन 'आप' की बात हो रही है।

Step 3: पूरे समूह को अलग कीजिए।
इसलिए पूरा समूह **दूसरों की सहायता करने वाले आप** एक इकाई है, जिसका

शीर्ष पद सर्वनाम 'आप' है।

Step 4: भेद की पुष्टि कीजिए।
शीर्ष पद सर्वनाम है, इसलिए यह **सर्वनाम पदबंध** है। यदि यहाँ 'आप' के स्थान पर कोई संज्ञा होती, तो वही समूह संज्ञा पदबंध कहलाता।

Final Answer: सर्वनाम पदबंध – **दूसरों की सहायता करने वाले आप**

Quick Tip: पहले वाक्य का सर्वनाम ढूँढ़िए, फिर उससे पहले आए वे सभी शब्द जोड़ लीजिए जो उसी सर्वनाम की विशेषता बता रहे हों।

14. हम सबको एड़ियों पर अकड़कर चलना अच्छा लगता था। – रेखांकित पदबंध का भेद लिखिए।

Correct Answer: –

Solution:

Concept:

- पदबंध का भेद उसके शीर्ष पद से तय होता है, न कि इस बात से कि समूह में कौन-कौन से शब्द आए हैं।
- कभी-कभी क्रिया का रूप भी वाक्य में संज्ञा का काम करता है, ऐसे रूप को क्रियार्थक संज्ञा कहते हैं।

Step 1: रेखांकित भाग का शीर्ष पद पहचानिए।
रेखांकित भाग है – एड़ियों पर अकड़कर **चलना**। इसका अंतिम और मुख्य शब्द **चलना** है।

Step 2: देखिए कि 'चलना' वाक्य में क्या काम कर रहा है।

यहाँ 'चलना' क्रिया की तरह काम नहीं कर रहा। वाक्य की मुख्य क्रिया तो 'लगता था' है।
प्रश्न कीजिए, हम सबको क्या अच्छा लगता था? उत्तर आएगा, एड़ियों पर अकड़कर चलना। अर्थात यह पूरा समूह वाक्य में **कर्ता** का काम कर रहा है।

Step 3: निष्कर्ष निकालिए।
जो पद वाक्य में कर्ता या कर्म का काम करे, वह संज्ञा होता है। यहाँ 'चलना' क्रियार्थक संज्ञा है, इसलिए पूरा समूह **संज्ञा पदबंध** है।

Step 4: भ्रम दूर कीजिए।
'अकड़कर' देखकर इसे क्रिया पदबंध समझने की गलती नहीं करनी चाहिए। क्रिया पदबंध में मुख्य क्रिया के साथ सहायक क्रियाएँ होती हैं, जैसे 'चलता रहता था'। यहाँ ऐसा नहीं है।

Final Answer: संज्ञा पदबंध

Quick Tip: पूरे रेखांकित भाग की जगह कोई एक शब्द रखकर देखिए। यदि वहाँ खेल या दौड़ जैसा शब्द बैठता है तो वह स्थान संज्ञा का है।

15. उसके साहसिक कारनामें आसपास के गाँवों में काफी चर्चित थे। – वाक्य में रेखांकित पदबंध का भेद लिखिए।

Correct Answer: –

Solution:

Concept:

- पदबंध का भेद उसके शीर्ष पद से तय होता है।
- समूह में विशेषण आ जाने से पदबंध विशेषण पदबंध नहीं बन जाता, जब तक शीर्ष पद ही विशेषण न हो।

Step 1: रेखांकित भाग के शब्द अलग कीजिए।
रेखांकित भाग है – उसके + साहसिक + **कारनामें**।

Step 2: शीर्ष पद पहचानिए।
समूह का मुख्य शब्द **कारनामें** है, जो एक संज्ञा है। शेष दोनों शब्द उसी की विशेषता बता रहे हैं।
'उसके' बताता है कि कारनामें किसके हैं और 'साहसिक' बताता है कि वे कैसे हैं।

Step 3: वाक्य में इसका काम देखिए।
प्रश्न कीजिए, चर्चित कौन थे? उत्तर है, उसके साहसिक कारनामें। अर्थात यह पूरा समूह वाक्य का कर्ता है, और कर्ता का स्थान संज्ञा का होता है।

Step 4: निष्कर्ष निकालिए।
शीर्ष पद संज्ञा है और समूह कर्ता का काम कर रहा है, इसलिए यह **संज्ञा पदबंध** है।

Final Answer: संज्ञा पदबंध

Quick Tip: वाक्य से पूछिए कि चर्चित कौन थे। जो उत्तर आए वही कर्ता है, और कर्ता का स्थान संज्ञा का होता है।

16. उसके पिता की प्रत्येक तीन वर्ष पर बदली होती रहती थी। वाक्य में रेखांकित पदबंध का भेद बताते हुए कारण भी स्पष्ट कीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

Concept:

- क्रिया पदबंध वह समूह है जिसमें मुख्य क्रिया के साथ एक या अधिक सहायक क्रियाएँ जुड़कर एक ही क्रिया का काम करती हैं।
- इस प्रश्न में केवल भेद बताना काफी नहीं, कारण भी लिखना है।

Step 1: रेखांकित भाग को टुकड़ों में बाँटिए।
रेखांकित भाग है – बदली + होती + रहती + थी।

Step 2: मुख्य और सहायक भाग अलग कीजिए।
'बदली होना' यहाँ मुख्य क्रिया है, और उसके साथ **रहती** तथा **थी** सहायक क्रियाओं के रूप में जुड़ी हैं।
'रहती' बताती है कि काम बार-बार होता था और 'थी' बताती है कि यह भूतकाल की बात है।

Step 3: जाँचिए कि पूरा समूह एक ही काम कर रहा है या नहीं।
इन चारों शब्दों को अलग-अलग करके पढ़ने पर अर्थ पूरा नहीं होता। ये मिलकर ही वाक्य की एकमात्र क्रिया बनाते हैं।

Step 4: भेद और कारण लिखिए।
अतः यह **क्रिया पदबंध** है।
कारण – इसमें मुख्य क्रिया के साथ सहायक क्रियाएँ जुड़ी हुई हैं और ये सब मिलकर एक इकाई के रूप में वाक्य की क्रिया का कार्य कर रही हैं, इसलिए पूरा समूह क्रिया पदबंध कहलाएगा।

Final Answer: यह **क्रिया पदबंध** है, क्योंकि इसमें मुख्य क्रिया के साथ सहायक क्रियाएँ मिलकर एक ही इकाई बनाती हैं और पूरा समूह वाक्य में क्रिया का कार्य करता है।

Quick Tip: वाक्य से पूछिए कि होता क्या था। उत्तर में जो पूरा शब्द-समूह आए, उसमें मुख्य क्रिया और सहायक क्रियाएँ अलग करके दिखाइए।

17. वे सरल हृदय व्यक्ति थे। – रेखांकित पदबंध का भेद लिखिए।

Correct Answer: –

Solution:

Concept:

- पदबंध का भेद उसके शीर्ष पद से तय होता है, अर्थात समूह का वह मुख्य शब्द जिसके चारों ओर बाकी शब्द जुड़े हों।
- समूह के आरंभ में सर्वनाम आ जाने से वह सर्वनाम पदबंध नहीं बन जाता।

Step 1: रेखांकित भाग के शब्द अलग कीजिए।
रेखांकित भाग है – वे + सरल + हृदय + **व्यक्ति**।

Step 2: शीर्ष पद पहचानिए।
समूह का मुख्य शब्द **व्यक्ति** है, जो संज्ञा है। 'वे' और 'सरल हृदय' दोनों उसी की विशेषता बता रहे हैं।

Step 3: वाक्य में इसका काम देखिए।
पूछिए, थे कौन? उत्तर है, वे सरल हृदय व्यक्ति। यह पूरा समूह वाक्य में कर्ता का काम कर रहा है।

Step 4: निष्कर्ष निकालिए।
शीर्ष पद संज्ञा है, इसलिए यह **संज्ञा पदबंध** है। यदि केवल 'सरल हृदय' रेखांकित होता, तो वह विशेषण पदबंध कहलाता।

Final Answer: संज्ञा पदबंध

Quick Tip: समूह के पहले शब्द को देखकर भेद मत तय कीजिए। अंतिम मुख्य शब्द देखिए, जिसे हटाने पर पूरा समूह टूट जाए।

18. क्योंकि गांधी जी व्यावहारिकता की कीमत को भी पहचानते थे इसलिए वे अपने विलक्षण आदर्श को चला सके। – रचना की दृष्टि से वाक्य-भेद लिखिए।

Correct Answer: –

Solution:

Concept:

- रचना के आधार पर वाक्य तीन प्रकार के होते हैं – सरल, संयुक्त और मिश्र।
- भेद पहचानने की कुंजी योजक शब्द है। 'कि, जो, जब, यदि, क्योंकि, यद्यपि' जैसे शब्द मिश्र वाक्य बनाते हैं, जबकि 'और, तथा, या, किंतु, परंतु' संयुक्त वाक्य बनाते हैं।

Step 1: वाक्य में उपवाक्य गिनिए।
वाक्य में दो भाग हैं –
पहला, 'गांधी जी व्यावहारिकता की कीमत को भी पहचानते थे'
दूसरा, 'वे अपने विलक्षण आदर्श को चला सके'
दो उपवाक्य हैं, इसलिए यह सरल वाक्य नहीं हो सकता।

Step 2: योजक शब्द पहचानिए।
दोनों भागों को जोड़ने वाला शब्द है **क्योंकि**, और उसके साथ 'इसलिए' आया है।

Step 3: योजक का स्वभाव समझिए।
'क्योंकि' एक व्यधिकरण योजक है। यह जिस उपवाक्य के आगे लगता है, उसे मुख्य उपवाक्य पर आश्रित बना देता है।
यहाँ पहला भाग अकेले खड़ा नहीं हो सकता, वह दूसरे भाग का कारण बता रहा है।

Step 4: भेद निश्चित कीजिए।
जब एक मुख्य उपवाक्य के साथ एक या अधिक आश्रित उपवाक्य जुड़े हों, तो वह **मिश्र वाक्य** कहलाता है।

Final Answer: मिश्र वाक्य

Quick Tip: योजक शब्द देखिए। क्योंकि, कि, जो, जब, यदि जैसे शब्द आश्रित उपवाक्य जोड़ते हैं और मिश्र वाक्य बनाते हैं।

19. टोपी एक कोने में बैठकर रोने लगा। – संयुक्त वाक्य में रूपांतरित करके लिखिए।

Correct Answer: –

Solution:

Concept:

- संयुक्त वाक्य में दो या अधिक स्वतंत्र उपवाक्य होते हैं, जो 'और, तथा, या, किंतु, परंतु' जैसे समानाधिकरण योजकों से जुड़ते हैं।
- सरल वाक्य को संयुक्त बनाने के लिए पूर्वकालिक क्रिया को पूर्ण क्रिया में बदलना पड़ता है।

Step 1: मूल वाक्य की बनावट देखिए।
वाक्य है – टोपी एक कोने में **बैठकर** रोने लगा।
इसमें एक ही कर्ता है और 'बैठकर' पूर्वकालिक क्रिया है, जो अपने आप में पूरी क्रिया नहीं है। इसलिए यह सरल वाक्य है।

Step 2: पूर्वकालिक क्रिया को पूर्ण क्रिया बनाइए।
'बैठकर' को बदलकर **बैठा** कर दीजिए। अब यह अपने आप में पूरी क्रिया है और

इससे एक स्वतंत्र उपवाक्य बन जाता है।

Step 3: उपयुक्त योजक लगाइए।
दोनों काम एक के बाद एक हुए हैं, इसलिए उन्हें जोड़ने के लिए **और** सबसे उपयुक्त है।

Step 4: नया वाक्य लिखकर जाँचिए।
टोपी एक कोने में बैठा और रोने लगा।
अब दोनों भाग अलग-अलग पढ़ने पर भी पूरे लगते हैं, इसलिए यह सही संयुक्त वाक्य है।

Final Answer: टोपी एक कोने में बैठा और रोने लगा।

Quick Tip: वाक्य में कर से बनी क्रिया ढूँढ़िए। उसे पूर्ण क्रिया में बदलकर और योजक से दोनों भागों को जोड़ दीजिए।

20. उसकी योजना किसी तरह नेपाल पहुँचने की है। – मिश्र वाक्य में रूपांतरित करके लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

Concept:

- मिश्र वाक्य में एक मुख्य उपवाक्य होता है और उससे जुड़ा कम से कम एक आश्रित उपवाक्य, जो प्रायः 'कि' से आरंभ होता है।
- सरल वाक्य को मिश्र बनाने के लिए उसके किसी पदबंध को पूरा उपवाक्य बनाना पड़ता है।

Step 1: मूल वाक्य की बनावट देखिए।
वाक्य है – उसकी योजना **किसी तरह नेपाल पहुँचने की** है।
यहाँ 'किसी तरह नेपाल पहुँचने की' एक पदबंध है, पूरा उपवाक्य नहीं। इसलिए यह सरल वाक्य है।

Step 2: तय कीजिए कि क्या मुख्य उपवाक्य रहेगा।
मुख्य बात यह है कि उसकी कोई योजना है। अतः मुख्य उपवाक्य बनेगा – **उसकी योजना यह है**।

Step 3: पदबंध को आश्रित उपवाक्य में बदलिए।
'नेपाल पहुँचने की' में क्रिया को पूर्ण रूप दीजिए और आगे 'कि' लगाइए – **कि वह किसी तरह नेपाल पहुँच जाए**।

Step 4: दोनों को जोड़कर वाक्य पूरा कीजिए।
उसकी योजना यह है कि वह किसी तरह नेपाल पहुँच जाए।
अब एक मुख्य उपवाक्य और एक आश्रित उपवाक्य है, इसलिए यह मिश्र वाक्य है।

Final Answer: उसकी योजना यह है कि वह किसी तरह नेपाल पहुँच जाए।

Quick Tip: मिश्र वाक्य का ढाँचा याद रखिए, यह है कि। मुख्य बात पहले लिखिए और कि के बाद विस्तार, क्रिया को पूर्ण रूप देकर।

21. पहले दस-पंद्रह मिनट तो मैं उलझन में पड़ा रहा। – रचना की दृष्टि से वाक्य-भेद लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

Concept:

- सरल वाक्य में एक ही कर्ता और एक ही मुख्य क्रिया होती है, अर्थात केवल एक उपवाक्य होता है।
- वाक्य कितना लंबा है, इससे भेद नहीं बदलता। लंबा वाक्य भी सरल हो सकता है।

Step 1: वाक्य का कर्ता खोजिए।
वाक्य है – पहले दस-पंद्रह मिनट तो **मैं** उलझन में पड़ा रहा।
कर्ता केवल एक है, **मैं**।

Step 2: मुख्य क्रिया खोजिए।
क्रिया है **पड़ा रहा**। इसमें 'रहा' सहायक क्रिया है, पर यह दूसरी अलग क्रिया नहीं है। पूरे वाक्य में क्रिया एक ही है।

Step 3: योजक शब्द ढूँढ़िए।
वाक्य में 'और, किंतु, क्योंकि, कि, जो, जब' जैसा कोई योजक नहीं है, जो दो उपवाक्यों को जोड़ता हो।
शेष शब्द 'पहले दस-पंद्रह मिनट तो' केवल समय बता रहे हैं, वे अलग उपवाक्य नहीं बनाते।

Step 4: भेद निश्चित कीजिए।
एक कर्ता, एक क्रिया और कोई योजक नहीं, अर्थात केवल एक उपवाक्य। इसलिए यह **सरल वाक्य** है।

Final Answer: सरल वाक्य

Quick Tip: वाक्य की पूर्ण क्रियाएँ गिनिए। एक ही क्रिया हो तो वाक्य सरल है, चाहे वह कितना भी लंबा क्यों न लगे।

22. मुझे अच्छी तरह पता है कि वह इन्हीं जंगलों में है। – सरल वाक्य में रूपांतरित करके लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

Concept:

- सरल वाक्य में केवल एक उपवाक्य होता है, अर्थात एक कर्ता और एक मुख्य क्रिया।
- मिश्र वाक्य को सरल बनाने के लिए 'कि' वाले आश्रित उपवाक्य को एक पदबंध में बदलना पड़ता है।

Step 1: मूल वाक्य के दो भाग पहचानिए।
मुख्य उपवाक्य – मुझे अच्छी तरह पता है।
आश्रित उपवाक्य – **कि** वह इन्हीं जंगलों में है।
दो उपवाक्य होने के कारण यह मिश्र वाक्य है।

Step 2: आश्रित उपवाक्य की क्रिया को संज्ञा रूप दीजिए।
'वह इन्हीं जंगलों में **है**' में क्रिया 'है' को बदलकर **होने** कर दीजिए। अब वह पूरी क्रिया नहीं रही, बल्कि एक पदबंध बन गया।

Step 3: 'कि' हटाकर पदबंध जोड़िए।
'कि' की आवश्यकता अब नहीं है, क्योंकि दूसरा उपवाक्य बचा ही नहीं। नया पदबंध बनेगा – **उसके इन्हीं जंगलों में होने का**।

Step 4: वाक्य पूरा करके जाँचिए।
मुझे उसके इन्हीं जंगलों में होने का अच्छी तरह पता है।
अब पूरे वाक्य में एक ही पूर्ण क्रिया 'है' बची है, इसलिए यह सरल वाक्य है।

Final Answer: मुझे उसके इन्हीं जंगलों में होने का अच्छी तरह पता है।

Quick Tip: कि हटाइए और उसके बाद वाली क्रिया को होने जैसे संज्ञा रूप में बदल दीजिए, साथ ही कर्ता को भी तदनुसार बदलिए।

23. 'दाल-भात' द्वंद्व समास का उदाहरण है, कैसे?

Correct Answer: —

Solution:

Concept:

- द्वंद्व समास में **दोनों पद प्रधान** होते हैं, अर्थात कोई भी पद दूसरे से कम महत्त्व का नहीं होता।
- इसकी सबसे बड़ी पहचान यह है कि विग्रह करने पर बीच में **और, या, अथवा, एवं** जैसा योजक लगता है।

Step 1: समस्तपद का विग्रह कीजिए।
दाल-भात का विग्रह होगा – **दाल और भात**।

Step 2: योजक की जाँच कीजिए।
विग्रह करते ही बीच में 'और' लगाना पड़ा। यही द्वंद्व समास की पहली पहचान है।

Step 3: दोनों पदों का महत्त्व देखिए।
यहाँ न तो दाल भात की विशेषता बता रही है और न भात दाल की। दोनों अलग-अलग वस्तुएँ हैं और दोनों बराबर महत्त्व की हैं।
अर्थ समझने के लिए दोनों की आवश्यकता है, किसी एक को हटाया नहीं जा सकता।

Step 4: निष्कर्ष लिखिए।
दोनों पद प्रधान हैं और विग्रह में 'और' लगता है, इसलिए 'दाल-भात' द्वंद्व समास का उदाहरण है।

Final Answer: 'दाल-भात' का विग्रह है **दाल और भात**। इसमें दोनों पद समान रूप से प्रधान हैं और विग्रह करने पर बीच में 'और' योजक लगता है, इसीलिए यह द्वंद्व समास का उदाहरण है।

Quick Tip: विग्रह करके देखिए कि बीच में और लगता है या नहीं, और यह भी जाँचिए कि दोनों पद बराबर महत्त्व के हैं या एक दूसरे की विशेषता बता रहा है।

24. लोग डरकर अपने-अपने पूजा-स्थलों में प्रार्थना करने लगे। – रेखांकित पद का समास-विग्रह कीजिए और समास का नाम लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

Concept:

- तत्पुरुष समास में दूसरा पद प्रधान होता है और विग्रह करने पर बीच में कोई कारक चिह्न लगता है, जैसे का, की, के, को, से, में।
- कारक चिह्न के आधार पर तत्पुरुष के उपभेद बनते हैं।

Step 1: समस्तपद को दो पदों में तोड़िए।
'पूजा-स्थल' में दो पद हैं – **पूजा** और **स्थल**।

Step 2: विग्रह कीजिए।
पूजा-स्थल का अर्थ है वह स्थल जो पूजा के लिए हो, अर्थात **पूजा का स्थल**।
विग्रह में बीच में 'का' लगाना पड़ा।

Step 3: प्रधान पद पहचानिए।
यहाँ मुख्य बात स्थल की हो रही है, पूजा तो केवल यह बता रही है कि वह कैसा स्थल है। अर्थात **दूसरा पद प्रधान** है।
दूसरे पद की प्रधानता तत्पुरुष समास की पहचान है।

Step 4: उपभेद बताइए।
विग्रह में 'का' लगा है, जो संबंध कारक का चिह्न है, इसलिए यह **संबंध तत्पुरुष समास** है।

Final Answer: समास-विग्रह – **पूजा का स्थल**। समास का नाम – **तत्पुरुष समास (संबंध तत्पुरुष)**।

Quick Tip: दोनों पदों के बीच का, को, से, में बारी-बारी लगाकर देखिए। जिससे अर्थ सहज बने वही विग्रह है, और वही चिह्न उपभेद बताता है।

25. पंचानन पद समास के किस भेद का उदाहरण है?

Correct Answer: —

Solution:

Concept:

- बहुव्रीहि समास में न पहला पद प्रधान होता है और न दूसरा, बल्कि दोनों मिलकर किसी **तीसरे** अर्थ की ओर संकेत करते हैं।
- वह तीसरा अर्थ प्रायः कोई व्यक्ति, देवता या वस्तु होती है जिसका नाम समस्तपद में कहीं नहीं आया।

Step 1: पद को तोड़कर शब्दार्थ देखिए।

'पंचानन' में दो पद हैं – **पंच** अर्थात पाँच, और **आनन** अर्थात मुख।
शब्दार्थ हुआ, पाँच मुख।

Step 2: जाँचिए कि क्या यही पूरा अर्थ है।
यदि अर्थ केवल 'पाँच मुख' होता, तो यह द्विगु समास होता। पर इस शब्द से किसी की पाँच मुख वाली गिनती नहीं, बल्कि एक विशेष व्यक्ति का बोध होता है।

Step 3: तीसरा अर्थ पहचानिए।
'पंचानन' का अर्थ है – **पाँच हैं आनन जिसके, अर्थात शिव**।
'शिव' शब्द न पहले पद में है, न दूसरे में। यही तीसरा अर्थ प्रधान है।

Step 4: भेद निश्चित कीजिए।
दोनों पदों को छोड़कर किसी अन्य अर्थ की प्रधानता है, इसलिए यह **बहुव्रीहि समास** है।

Final Answer: बहुव्रीहि समास – पंचानन अर्थात पाँच हैं आनन जिसके, वह शिव।

Quick Tip: विग्रह करके देखिए कि अंत में जिसके या वह जैसा शब्द आता है या नहीं। यदि किसी तीसरे का बोध हो तो समास बहुव्रीहि है, द्विगु नहीं।

26. नियम के अनुसार ही कार्य करो। – रेखांकित पदों के लिए उपयुक्त समस्तपद और समास के भेद का नाम लिखिए।

Correct Answer: –

Solution:

Concept:

- अव्ययीभाव समास में **पहला पद अव्यय** होता है और वही प्रधान होता है, तथा पूरा समस्तपद क्रिया-विशेषण की तरह काम करता है।
- प्रति, यथा, आ, अनु, भर, हर, बे, नि जैसे उपसर्ग या अव्यय इसकी पहचान हैं।

Step 1: रेखांकित भाग का अर्थ समझिए।
'नियम के अनुसार' का अर्थ है नियम के अनुरूप, नियम के अनुकूल।

Step 2: इसे एक शब्द में बदलिए।
'अनुसार' के लिए 'अनु' अव्यय का प्रयोग करके समस्तपद बनता है – **नियमानुसार**।

Step 3: भेद पहचानिए।
'अनु' एक अव्यय है और वही यहाँ अर्थ का मुख्य भार उठा रहा है। साथ ही यह पूरा पद बताता है कि कार्य *कैसे* करना है, अर्थात क्रिया-विशेषण का काम कर रहा है। यही **अव्ययीभाव समास** की पहचान है।

Step 4: उदाहरणों से पुष्टि कीजिए।
यथाशक्ति, प्रतिदिन, आजीवन, भरपेट, यथासंभव, ये सब अव्ययीभाव समास के उदाहरण हैं और सब क्रिया-विशेषण की तरह प्रयुक्त होते हैं।

Final Answer: समस्तपद – **नियमानुसार**, समास का भेद – **अव्ययीभाव समास**।

Quick Tip: पहले दोनों शब्दों को जोड़कर एक शब्द बनाइए। फिर देखिए कि वह पद क्रिया के बारे में बता रहा है या किसी संज्ञा के बारे में।

27. 'कर्मधारय समास' का एक उदाहरण देकर उसका समास-विग्रह भी लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

Concept:

- कर्मधारय समास में एक पद **विशेषण** होता है और दूसरा **विशेष्य**, अथवा एक पद उपमान होता है और दूसरा उपमेय।
- इसकी पहचान यह है कि विग्रह करने पर बीच में **है जो** या **के समान** लगता है।

Step 1: उपयुक्त उदाहरण चुनिए।
एक सरल उदाहरण है **नीलकमल**।

Step 2: दोनों पदों की भूमिका देखिए।
इसमें **नील** विशेषण है, जो बताता है कि कमल कैसा है, और **कमल** विशेष्य है, जिसके बारे में बात हो रही है।

Step 3: विग्रह कीजिए।
नीलकमल का विग्रह होगा – **नीला है जो कमल**।
बीच में 'है जो' लगाना पड़ा, जो कर्मधारय की पक्की पहचान है।

Step 4: कुछ और उदाहरण जोड़िए।
महापुरुष अर्थात महान है जो पुरुष, चरणकमल अर्थात कमल के समान चरण, नीलगगन अर्थात नीला है जो गगन। इन सबमें विशेषण और विशेष्य का संबंध है।

Final Answer: उदाहरण – **नीलकमल**, समास-विग्रह – **नीला है जो कमल**।

Quick Tip: ऐसा शब्द चुनिए जिसमें एक पद दूसरे का गुण बता रहा हो, और विग्रह में है जो लगाकर लिखिए, का या को नहीं।

28. 'सिर आँखों पर बिठाना' – मुहावरे का अर्थ लिखिए और मुहावरे का वाक्य में प्रयोग कीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

Concept:

- मुहावरा वह वाक्यांश है जो अपने शब्दों के सीधे अर्थ से हटकर कोई विशेष लाक्षणिक अर्थ देता है।
- इस प्रश्न में दो काम करने हैं, पहले अर्थ लिखना और फिर ऐसा वाक्य बनाना जिसमें वही अर्थ स्पष्ट झलके।

Step 1: शब्दों के सीधे अर्थ से आगे बढ़िए।
सीधा अर्थ लें तो किसी को सिर और आँखों पर बैठाना संभव ही नहीं है। इसलिए यहाँ लाक्षणिक अर्थ लेना होगा।

Step 2: लाक्षणिक अर्थ समझिए।
सिर और आँखें शरीर के सबसे ऊपरी और सबसे कोमल अंग हैं। किसी को वहाँ स्थान देने का भाव है उसे सर्वोच्च स्थान देना।
अतः अर्थ हुआ – **बहुत अधिक आदर-सम्मान करना**।

Step 3: ऐसा प्रसंग सोचिए जहाँ यह अर्थ खुले।
वाक्य ऐसा होना चाहिए जिसमें किसी के सम्मान का कारण भी दिखाई दे, तभी अर्थ स्पष्ट होगा।

Step 4: वाक्य बनाइए।
वाक्य प्रयोग – सीमा पर वीरता दिखाकर लौटे उस सैनिक को पूरे गाँव ने सिर आँखों पर बिठाया।

Final Answer: अर्थ – बहुत अधिक आदर-सम्मान करना।

वाक्य प्रयोग – सीमा पर वीरता दिखाकर लौटे उस सैनिक को पूरे गाँव ने सिर आँखों पर बिठाया।

Quick Tip: अर्थ लिखने के बाद ऐसा वाक्य बनाइए जिसमें आदर का कारण भी दिखे, तभी मुहावरे का अर्थ वाक्य से स्पष्ट होगा।

29. 'महंत जी को लग रहा था कि हरिहर _____ गया है।' – रिक्त स्थान की पूर्ति उपयुक्त मुहावरे से कीजिए।

Correct Answer: –

Solution:

Concept:

- रिक्त स्थान वाले मुहावरे में पहले वाक्य का प्रसंग समझना पड़ता है, फिर ऐसा मुहावरा चुनना पड़ता है जो वाक्य में व्याकरण की दृष्टि से भी बैठ जाए।
- वाक्य में आगे 'गया है' लिखा है, इसलिए चुना गया मुहावरा इसी रूप में जुड़ना चाहिए।

Step 1: प्रसंग पहचानिए।
यह 'हरिहर काका' पाठ का प्रसंग है। महंत जी हरिहर काका की जमीन ठाकुरबारी के नाम कराना चाहते थे और इसके लिए हर तरह के हथकंडे अपना रहे थे।

Step 2: महंत जी की मनःस्थिति समझिए।
जब हरिहर काका उनकी बातों में नहीं आए और उनके प्रभाव से बाहर चले गए, तो महंत जी को लगा कि अब वे उनके वश में नहीं रहे।

Step 3: उपयुक्त मुहावरा चुनिए।
इस भाव के लिए सबसे उपयुक्त मुहावरा है **हाथ से निकल जाना**, जिसका अर्थ है

वश से बाहर हो जाना, काबू में न रहना।

Step 4: वाक्य में बिठाकर जाँचिए।
महंत जी को लग रहा था कि हरिहर **हाथ से निकल** गया है।
वाक्य व्याकरण की दृष्टि से भी ठीक बैठा और अर्थ भी पूरा हुआ।

Final Answer: महंत जी को लग रहा था कि हरिहर **हाथ से निकल** गया है।
(मुहावरा – हाथ से निकल जाना, अर्थ – वश से बाहर हो जाना।)

Quick Tip: रिक्त स्थान के बाद गया है लिखा है, इसलिए वैसा ही रूप वाला मुहावरा चुनिए। प्रसंग यह है कि हरिहर काका महंत जी के वश से बाहर हो गए थे।

30. 'सिर पर नंगी तलवार लटकना' मुहावरे का वाक्य में इस तरह प्रयोग कीजिए कि अर्थ स्पष्ट हो जाए।

Correct Answer: –

Solution:

Concept:

- प्रश्न में शर्त लगी है कि अर्थ वाक्य से ही स्पष्ट हो जाए, इसलिए वाक्य में ऐसा प्रसंग जोड़ना आवश्यक है जिससे पढ़ने वाला अर्थ समझ सके।
- केवल मुहावरे को वाक्य में रख देना पर्याप्त नहीं होगा।

Step 1: मुहावरे का अर्थ तय कीजिए।
सिर के ऊपर खुली तलवार टँगी हो तो व्यक्ति हर क्षण डर में रहेगा कि वह कब गिर पड़े।
अतः अर्थ है – **सिर पर लगातार कोई बड़ा खतरा मँडराना**।

Step 2: ऐसा प्रसंग चुनिए जहाँ खतरा लगातार बना रहे।
जैसे नौकरी जाने का डर, परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने का डर, या कर्ज चुकाने की अंतिम तारीख निकट आना। इन सबमें खतरा एक बार का नहीं, लगातार बना रहता है।

Step 3: वाक्य में कारण भी जोड़िए।
वाक्य में यह भी दिखना चाहिए कि खतरा किस बात का है, तभी अर्थ पूरी तरह खुलेगा।

Step 4: वाक्य लिखिए।
वाक्य प्रयोग – कर्ज चुकाने की अंतिम तारीख पास आते ही किसान के सिर पर नंगी तलवार लटकने लगी।
इस वाक्य से स्पष्ट है कि किसान हर क्षण भय में जी रहा था।

Final Answer: कर्ज चुकाने की अंतिम तारीख पास आते ही किसान के सिर पर नंगी तलवार लटकने लगी।
(अर्थ – सिर पर लगातार बड़ा खतरा मँडराना।)

Quick Tip: पहले खतरे का कारण लिखिए, फिर मुहावरा लगाइए। इस क्रम से वाक्य पढ़ते ही अर्थ अपने आप स्पष्ट हो जाएगा।

31. 'बिना परिश्रम के ही सफलता मिल जाना' – अर्थ को व्यक्त करने वाला एक उपयुक्त मुहावरा लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

Concept:

- यहाँ उलटा काम करना है। अर्थ दिया गया है और उसके लिए मुहावरा खोजना है।

- ऐसे प्रश्न में दिए गए अर्थ के दोनों भागों को अलग-अलग पकड़ना चाहिए, यहाँ 'बिना परिश्रम' और 'सफलता मिलना'।

Step 1: अर्थ के दोनों भाग पहचानिए।
पहला भाग – कोई मेहनत नहीं की गई।
दूसरा भाग – फिर भी काम बन गया, लाभ मिल गया।

Step 2: ऐसा मुहावरा सोचिए जिसमें दोनों भाव हों।
घर बैठे गंगा आना इस अर्थ को पूरी तरह व्यक्त करता है। गंगा स्नान के लिए दूर तीर्थ जाना पड़ता है, पर यदि गंगा स्वयं घर आ जाए तो बिना किसी प्रयास के पुण्य मिल गया।

Step 3: वाक्य में रखकर जाँचिए।
'नौकरी की तलाश में भटक ही रहा था कि पड़ोसी ने अपनी कंपनी में बुला लिया, मानो घर बैठे गंगा आ गई।'
अर्थ ठीक बैठता है।

Step 4: एक विकल्प भी जान लीजिए।
इसी भाव के लिए **बैठे-बिठाए लाभ होना** भी कहा जा सकता है, जिसका अर्थ है बिना कुछ किए फायदा मिल जाना।

Final Answer: घर बैठे गंगा आना – अर्थात बिना किसी परिश्रम के ही काम बन जाना या लाभ मिल जाना।

Quick Tip: स्थिति का चित्र मन में बनाइए, कोई बैठा है और लाभ अपने आप चला आया। ऐसा मुहावरा याद कीजिए जिसमें यात्रा किए बिना ही तीर्थ का फल मिल जाए।

32. 'चकरा जाना' और 'चक्कर में पड़ना' का अर्थ लिखकर इन दोनों मुहावरों में अंतर स्पष्ट कीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

Concept:

- कुछ मुहावरे सुनने में मिलते-जुलते लगते हैं पर उनका अर्थ अलग होता है। ऐसे में दोनों के अर्थ अलग-अलग लिखकर फिर अंतर बताना चाहिए।
- अंतर स्पष्ट करने के लिए यह देखना चाहिए कि दोनों में स्थिति का स्वभाव कैसे बदलता है।

Step 1: पहले मुहावरे का अर्थ लिखिए।
चकरा जाना – घबरा जाना, कुछ समझ में न आना, बुद्धि का काम करना बंद कर देना।

Step 2: दूसरे मुहावरे का अर्थ लिखिए।
चक्कर में पड़ना – किसी उलझन या मुसीबत में फँस जाना, धोखे में आ जाना।

Step 3: अंतर का पहला बिंदु बताइए।
'चकरा जाना' मन की अवस्था बताता है, अर्थात व्यक्ति के भीतर की घबराहट। इसमें कोई बाहरी जाल नहीं होता।
'चक्कर में पड़ना' परिस्थिति बताता है, अर्थात व्यक्ति किसी उलझन या जाल में फँस गया है।

Step 4: उदाहरण से अंतर दिखाइए।
कठिन प्रश्न देखकर विद्यार्थी **चकरा गया**। (वह केवल घबरा गया।)
सस्ते सामान के लालच में वह ठग के **चक्कर में पड़ गया**। (वह जाल में फँस गया।)

Final Answer: **चकरा जाना** का अर्थ है घबरा जाना और कुछ समझ में न आना,

जबकि **चक्कर में पड़ना** का अर्थ है किसी उलझन या धोखे में फँस जाना। पहला मन की घबराहट बताता है और दूसरा बाहरी मुसीबत में फँसना।

Quick Tip: दोनों के अर्थ अलग-अलग लिखिए, फिर एक ही स्थिति में दोनों को रखकर देखिए। एक मन की घबराहट बताता है और दूसरा किसी जाल में फँसना।

33. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त विकल्पों का चयन कीजिए :

गिरि का गौरव गाकर झर-झर
मद में नस-नस उत्तेजित कर
मोती की लड़ियों-से सुंदर
झरते हैं झाग भरे निर्झर!
  गिरिवर के उर से उठ-उठकर
  उच्चाकांक्षाओं से तरुवर
  हैं झाँक रहे नीरव-नभ पर
  अनिमेष, अटल, कुछ चिंतापर।

Correct Answer: —

34. 'अनिमेष' का अर्थ नहीं है

(A) एकटक

(B) लगातार

(C) निर्निमेष

(D) झाँकना

Correct Answer: (D) झाँकना

Solution:

Concept:

- यह नकारात्मक प्रश्न है, अर्थात जो शब्द 'अनिमेष' का अर्थ *नहीं* है वही उत्तर होगा।
- ऐसे प्रश्न में तीन विकल्प समानार्थी होंगे और एक बेमेल, इसलिए बेमेल शब्द ढूँढ़ना है।

Step 1: शब्द का मूल अर्थ समझिए।
'मेष' का अर्थ है पलक झपकना और 'अ' उपसर्ग निषेध का बोध कराता है। अतः **अनिमेष** का अर्थ हुआ बिना पलक झपकाए, एकटक।

Step 2: विकल्प (A) और (C) की जाँच कीजिए।
'एकटक' का अर्थ है टकटकी लगाकर देखना और 'निर्निमेष' का अर्थ भी बिना पलक झपकाए है। दोनों 'अनिमेष' के समानार्थी हैं।

Step 3: विकल्प (B) की जाँच कीजिए।
जब कोई बिना पलक झपकाए देखता है, तो देखना लगातार चलता रहता है। इस अर्थ में 'लगातार' भी उसी भाव के निकट है।

Step 4: विकल्प (D) की जाँच कीजिए।
'झाँकना' एक क्रिया है, जिसका अर्थ है किसी ओर देखना। यह बताता है कि देखा जा रहा है, पर यह नहीं बताता कि *कैसे* देखा जा रहा है।
काव्यांश में भी 'झाँक रहे' और 'अनिमेष' दोनों अलग-अलग आए हैं, एक क्रिया है और दूसरा उसकी विशेषता।

Final Answer: (D) झाँकना

Quick Tip: अनिमेष में अ उपसर्ग और निमेष अर्थात पलक झपकना है। अब देखिए

कौन-सा विकल्प देखने का ढंग नहीं, बल्कि स्वयं देखने की क्रिया बता रहा है।

35. पद्यांश में किसकी तुलना मोती की लड़ियों से की गई है?

(A) महाकार पर्वत की

(B) झाग भरे झरने की

(C) निर्मल ताल की

(D) विशाल वृक्ष की

Correct Answer: (B) झाग भरे झरने की

Solution:

Concept:

- उपमा में उपमेय अर्थात जिसकी तुलना की जा रही है और उपमान अर्थात जिससे तुलना की जा रही है, दोनों अलग होते हैं।
- 'से' या 'के समान' शब्द के *पहले* जो आए वही उपमेय होता है।

Step 1: संबंधित पंक्तियाँ पढ़िए।
'मोती की लड़ियों-से सुंदर
झरते हैं झाग भरे निर्झर!'

Step 2: उपमान पहचानिए।
'मोती की लड़ियाँ' उपमान है, अर्थात जिससे तुलना की जा रही है।

Step 3: उपमेय पहचानिए।
पंक्ति आगे बताती है कि क्या मोती की लड़ियों जैसा सुंदर है, तो उत्तर मिलता है – **झाग भरे निर्झर**, अर्थात झाग से भरे हुए झरने।

Step 4: तुलना का आधार समझिए।

पहाड़ से गिरता सफेद झागदार पानी लंबी सफेद लड़ी जैसा दिखता है, इसीलिए कवि ने उसकी तुलना मोती की लड़ियों से की है।
शेष विकल्प, पर्वत, ताल और वृक्ष, इस तुलना में आए ही नहीं हैं।

Final Answer: (B) झाग भरे झरने की

Quick Tip: सोचिए कि मोती की लड़ी कैसी दिखती है, सफेद, चमकीली और लटकती हुई। अब देखिए विकल्पों में कौन-सी वस्तु ऐसी दिखती है।

36. 'नीरव-नभ' का आशय है

(A) बिना बादल का आकाश

(B) बादलों से भरा आकाश

(C) बादल रहित शांत आकाश

(D) तेज़ हवा से युक्त आकाश

Correct Answer: (C) बादल रहित शांत आकाश

Solution:

Concept:

- समस्त शब्द का आशय जानने के लिए दोनों पदों का अर्थ अलग-अलग निकालकर फिर जोड़ना चाहिए।
- यहाँ ध्यान देना है कि विकल्पों में केवल एक अर्थ नहीं, बल्कि पूरा भाव माँगा गया है।

Step 1: दोनों पदों का अर्थ लिखिए।
नीरव = जिसमें कोई रव अर्थात ध्वनि न हो, नितांत शांत।
नभ = आकाश।

Step 2: जोड़कर अर्थ बनाइए।
नीरव-नभ अर्थात **पूर्णतः शांत आकाश**।

Step 3: काव्यांश के प्रसंग से जोड़िए।
कविता वर्षा ऋतु के पर्वतीय दृश्य की है। बादल घिरने से पहले का वह क्षण है जब आकाश साफ और नितांत शांत है, और वृक्ष उसी की ओर एकटक देख रहे हैं। शांत आकाश तभी संभव है जब बादल और तेज हवा दोनों न हों।

Step 4: विकल्पों की तुलना कीजिए।
(B) बादलों से भरा आकाश कहता है, जो शांत नहीं होता। (D) तेज हवा की बात करता है, जो नीरवता के विपरीत है।
(A) केवल बादल न होना बताता है, पर नीरवता अर्थात शांति का भाव छोड़ देता है।
(C) दोनों बातें कहता है, बादल रहित भी और शांत भी, इसलिए यही पूरा आशय है।

Final Answer: (C) बादल रहित शांत आकाश

Quick Tip: नीरव में रव अर्थात ध्वनि छिपी है। ऐसा विकल्प चुनिए जो बादल न होने के साथ-साथ शांति का भाव भी बताए।

37. पेड़ 'चिंतापर' क्यों दिखाई दे रहे हैं?

(A) वे आकाश जैसी ऊँचाई पाने के लिए विचारमग्न हैं।
(B) पर्वतों की आकांक्षाओं को पूरा नहीं कर पा रहे हैं।
(C) पर्वतों से झरने वाले झरनों की गति से भयभीत हैं।
(D) नीरव-नभ का रूप उन्हें आश्चर्यचकित कर रहा है।

Correct Answer: (A) वे आकाश जैसी ऊँचाई पाने के लिए विचारमग्न हैं।

Solution:

Concept:

- ‘चिंतापर’ का अर्थ है चिंता में डूबा हुआ, विचारमग्न। यहाँ चिंता का भाव दुख नहीं, गहरे सोच का है।
- उत्तर वही होगा जो काव्यांश की उससे जुड़ी पंक्तियों से निकले, कल्पना से नहीं।

Step 1: संबंधित पंक्तियाँ पढ़िए।
‘गिरिवर के उर से उठ-उठकर
उच्चाकांक्षाओं से तरुवर
हैं झाँक रहे नीरव-नभ पर
अनिमेष, अटल, कुछ चिंतापर।’

Step 2: ‘उच्चाकांक्षाओं’ शब्द पर ध्यान दीजिए।
इसका अर्थ है ऊँची आकांक्षाएँ। कवि कहता है कि वृक्ष ऊँची आकांक्षाओं के साथ पर्वत के हृदय से उठ-उठकर आकाश की ओर झाँक रहे हैं।
अर्थात वृक्ष स्वयं ऊँचाई पाना चाहते हैं।

Step 3: चिंता का कारण जोड़िए।
वे आकाश की ओर एकटक और अटल देख रहे हैं और कुछ चिंतामग्न हैं। यह चिंता उसी ऊँचाई तक पहुँचने के विचार की है, जिसे पाने की वे आकांक्षा रखते हैं।

Step 4: शेष विकल्पों की जाँच कीजिए।
(B) कहता है कि वे पर्वतों की आकांक्षाएँ पूरी नहीं कर पा रहे, पर काव्यांश में आकांक्षाएँ वृक्षों की हैं, पर्वत की नहीं।
(C) भय की बात करता है, जबकि ‘अटल’ शब्द भय का नहीं, दृढ़ता का सूचक है।
(D) आश्चर्य की बात करता है, पर कवि ने आश्चर्य नहीं, चिंता कही है।

Final Answer: (A) वे आकाश जैसी ऊँचाई पाने के लिए विचारमग्न हैं।

Quick Tip: चिंतापर के साथ आए शब्द देखिए, उच्चाकांक्षाओं और अटल। अटल रहने वाला भयभीत नहीं होता, इसलिए भय और आश्चर्य वाले विकल्प पहले हटा दीजिए।

38. निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए विकल्पों के सही उत्तर चुनकर लिखिए :

कथन : एकाग्रता, अटल विश्वास और लक्ष्य पर दृष्टि सफल होने के सहायक तत्त्व हैं।
कारण : जीवन में सफलता बिना प्रयास के भाग्य से स्वयं ही प्राप्त हो जाती है।

(A) कथन और कारण दोनों गलत हैं।

(B) कथन और कारण दोनों सहीं हैं।

(C) कथन गलत है, परंतु कारण सही है।

(D) कथन सही है, किंतु कारण गलत है।

Correct Answer: (D) कथन सही है, किंतु कारण गलत है।

Solution:

Concept:

- कथन और कारण को अलग-अलग जाँचिए, फिर दोनों में मेल है या विरोध, यह देखिए।
- यहाँ दोनों वाक्य एक-दूसरे के ठीक उलट बात कह रहे हैं, इसलिए दोनों सही नहीं हो सकते।

Step 1: कथन की जाँच कीजिए।
काव्यांश में वृक्ष **अनिमेष** अर्थात एकटक देख रहे हैं, **अटल** अर्थात दृढ़ हैं, और **उच्चाकांक्षाओं** से भरे हैं।
एकाग्रता, अटल विश्वास और लक्ष्य पर टिकी दृष्टि, तीनों भाव यहाँ मौजूद हैं और ये सचमुच सफलता के सहायक तत्त्व हैं। कथन **सही** है।

Step 2: कारण की जाँच कीजिए।
कारण कहता है कि सफलता बिना प्रयास के भाग्य से स्वयं मिल जाती है। यह बात न तो काव्यांश कहता है और न ही यह व्यावहारिक रूप से ठीक है।
कारण **गलत** है।

Step 3: दोनों का आपसी विरोध देखिए।
यदि सफलता बिना प्रयास मिल जाती, तो एकाग्रता और अटल विश्वास की आवश्यकता ही न पड़ती। अर्थात कारण, कथन को काट रहा है, समझा नहीं रहा।

Step 4: सही विकल्प चुनिए।
कथन सही और कारण गलत, अर्थात विकल्प (D)।

Final Answer: (D) कथन सही है, किंतु कारण गलत है।

Quick Tip: देखिए कि दोनों वाक्य एक-दूसरे को काट रहे हैं। एक प्रयास की बात करता है और दूसरा कहता है प्रयास की जरूरत ही नहीं।

39. 'मनुष्यता' कविता के आधार पर लिखिए कि 'अखंड आत्म भाव' रखने के क्या लाभ हैं?

Correct Answer: —

Solution:

Concept:

- 'मनुष्यता' कविता मैथिलीशरण गुप्त की है, जिसमें कवि सारी मानव जाति को एक मानने का संदेश देता है।
- 'अखंड आत्म भाव' का अर्थ है यह अनुभव करना कि सब में एक ही आत्मा है, कोई पराया नहीं।

Step 1: पहला लाभ, भेदभाव समाप्त होता है।
जब मनुष्य सबमें एक ही आत्मा देखता है, तो जाति, धर्म, रंग और ऊँच-नीच का भेद अपने आप मिट जाता है। कोई अपना-पराया नहीं रह जाता।

Step 2: दूसरा लाभ, परस्पर सहानुभूति और सहयोग बढ़ता है।
दूसरे का दुख अपना दुख लगने लगता है, इसलिए मनुष्य स्वयं आगे बढ़कर सहायता करता है। कवि इसीलिए कहता है कि सबको साथ लेकर चलो, अकेले बढ़ने में कोई गौरव नहीं।

Step 3: तीसरा लाभ, समाज में एकता और प्रेम फैलता है।
आपसी बैर और स्वार्थ समाप्त होकर बंधुत्व का भाव जागता है। पूरा समाज एक परिवार की तरह जुड़ जाता है।

Step 4: चौथा लाभ, जीवन सार्थक हो जाता है।
कवि के अनुसार सच्चा मनुष्य वही है जो दूसरों के लिए जिए और मरे। अखंड आत्म भाव रखने वाला व्यक्ति परोपकार करता है, इसलिए मृत्यु के बाद भी लोग उसे याद रखते हैं।

Final Answer: अखंड आत्म भाव रखने से जाति, धर्म और ऊँच-नीच का भेद मिट जाता है, मनुष्य में परस्पर सहानुभूति और सहयोग जागता है, समाज में एकता तथा प्रेम बढ़ता है, और परोपकार के कारण जीवन सार्थक बन जाता है।

Quick Tip: अखंड आत्म भाव अर्थात सब में एक ही आत्मा देखना। पहले सोचिए कि इस भाव के बिना समाज में क्या बिगड़ता है, उसका उलटा ही इसका लाभ है।

40. 'साखी' में कबीर ने प्रभु प्राप्ति में सबसे बड़ी बाधा किसे और क्यों बताया है?

Correct Answer: —

Solution:

Concept:

- कबीर की साखियों का मूल स्वर यह है कि ईश्वर बाहर कहीं नहीं, भीतर ही है, पर हम उसे देख नहीं पाते।
- प्रश्न दो बातें माँगता है, बाधा कौन-सी है और वह बाधा क्यों है।

Step 1: बाधा का नाम बताइए।
कबीर के अनुसार प्रभु प्राप्ति में सबसे बड़ी बाधा **अहंकार** अर्थात 'मैं' का भाव है।

Step 2: कबीर की पंक्ति से पुष्टि कीजिए।
वे कहते हैं कि जब तक 'मैं' था तब तक हरि नहीं थे, और अब हरि हैं तो 'मैं' नहीं रहा।
अर्थात अहंकार और ईश्वर एक साथ नहीं रह सकते।
दीपक जलते ही अँधेरा मिट जाता है, वैसे ही ज्ञान का प्रकाश आते ही अहंकार समाप्त हो जाता है।

Step 3: कारण बताइए कि यह सबसे बड़ी बाधा क्यों है।
अहंकार मनुष्य को यह भ्रम देता है कि वह स्वयं सब कुछ है। इस भ्रम में वह न किसी से सीखता है, न झुकता है, और न ही प्रेम कर पाता है।
भक्ति का मार्ग समर्पण का मार्ग है, और जो झुक ही न सके वह समर्पण नहीं कर सकता।

Step 4: निष्कर्ष लिखिए।
इसीलिए कबीर बार-बार अहंकार त्यागने पर बल देते हैं, क्योंकि जब तक 'मैं' भीतर बैठा है, ईश्वर के लिए स्थान ही नहीं बचता।

Final Answer: कबीर ने प्रभु प्राप्ति में सबसे बड़ी बाधा अहंकार अर्थात 'मैं' के भाव को बताया है। कारण यह है कि अहंकार और ईश्वर एक साथ नहीं रह सकते,

क्योंकि अहंकारी व्यक्ति न झुक पाता है, न समर्पण कर पाता है, और भक्ति बिना समर्पण के संभव नहीं।

Quick Tip: कबीर की उस पंक्ति को याद कीजिए जिसमें मैं और हरि के एक साथ न रह पाने की बात है, और दीपक तथा अँधेरे का उदाहरण भी जोड़िए।

41. 'आत्म त्राण' कविता के संदर्भ में लिखिए कि संकट में अपनों का साथ न मिलने तथा उनसे छले जाने पर भी कवि संकट का सामना कैसे करना चाहता है?

Correct Answer: —

Solution:

Concept:

- 'आत्म त्राण' रवींद्रनाथ ठाकुर की कविता है, जिसका अर्थ है स्वयं की रक्षा।
- इसमें कवि ईश्वर से संकट हरने की प्रार्थना नहीं करता, बल्कि संकट से जूझने का बल माँगता है।

Step 1: कवि की मूल प्रार्थना समझिए।
कवि कहता है कि वह यह नहीं चाहता कि ईश्वर उसकी विपदाएँ दूर कर दें। वह केवल इतना चाहता है कि विपदा में वह **भयभीत न हो** और उसे सहने की शक्ति मिले।

Step 2: अपनों के साथ न देने की स्थिति देखिए।
कवि कहता है कि यदि दुख की रात में सारा संसार उसे छोड़ दे और कोई सहायक न रहे, तो भी उसका विश्वास डिगे नहीं।
वह चाहता है कि ऐसी स्थिति में भी वह अपने ऊपर संदेह न करे।

Step 3: छले जाने की स्थिति देखिए।

यदि अपने ही लोग उसे धोखा दें और हानि पहुँचाएँ, तो भी वह चाहता है कि उसके मन में उनके प्रति कटुता न आए। वह किसी पर दोष न मढ़े और अपना संयम बनाए रखे।

Step 4: संकट से सामना करने का उसका ढंग बताइए।
कवि संकट का सामना **अपने ही बल पर, धैर्य और आत्मविश्वास के साथ** करना चाहता है। वह चाहता है कि सुख के दिनों में जैसे वह ईश्वर को स्मरण करता है, वैसे ही दुख की रात में भी उसका सिर झुके नहीं और वह ईश्वर पर संदेह न करे।

Final Answer: कवि संकट से बचना नहीं चाहता, बल्कि उसे स्वयं अपने बल पर सहना चाहता है। अपनों के छोड़ देने और छल करने पर भी वह चाहता है कि उसका विश्वास न डिगे, मन में कटुता न आए, और वह धैर्य तथा आत्मविश्वास के साथ बिना सिर झुकाए संकट का सामना करे।

Quick Tip: ध्यान रखिए कि कवि दुख दूर करने की प्रार्थना नहीं करता। वह दुख सहने की शक्ति माँगता है, यही कविता का मूल भाव है।

42. 'कर चले हम फ़िदा' कविता से उद्धृत 'राम भी तुम, तुम्हीं लक्ष्मण साथियों' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

Concept:

- 'कर चले हम फ़िदा' कैफ़ी आज़मी का गीत है, जिसमें बलिदान देने वाले सैनिक अपने साथियों को संबोधित कर रहे हैं।
- इस पंक्ति में कवि ने देश की रक्षा को राम-लक्ष्मण के कार्य से जोड़ा है।

Step 1: पंक्ति का प्रसंग समझिए।
मरते हुए सैनिक अपने जीवित साथियों से कह रहे हैं कि अब देश की रक्षा का भार तुम्हारे कंधों पर है।

Step 2: राम और लक्ष्मण के संदर्भ को जोड़िए।
राम और लक्ष्मण ने सीता की रक्षा के लिए रावण से युद्ध किया था और उसे पराजित किया था। वे धर्म और मर्यादा की रक्षा के प्रतीक हैं।

Step 3: तुलना का आशय खोलिए।
कवि कहता है कि आज भारत माता की स्थिति सीता जैसी है और शत्रु रावण जैसा है। इसलिए सैनिक ही आज के राम और लक्ष्मण हैं, जिन्हें मातृभूमि की रक्षा करनी है। इस तुलना से सैनिकों का उत्साह बढ़ता है और उनके कार्य को धर्म का रूप मिल जाता है।

Step 4: संदेश बताइए।
कवि सैनिकों को यह याद दिलाना चाहता है कि उनका कार्य केवल नौकरी नहीं, एक पवित्र कर्तव्य है, और जैसे राम-लक्ष्मण पीछे नहीं हटे, वैसे ही उन्हें भी पीछे नहीं हटना है।

Final Answer: इस पंक्ति का आशय यह है कि आज के सैनिक ही राम और लक्ष्मण के समान हैं। जैसे उन्होंने सीता की रक्षा के लिए रावण से युद्ध किया, वैसे ही सैनिकों को रावण रूपी शत्रु से सीता रूपी भारत माता की रक्षा करनी है। कवि इस तुलना से उनमें कर्तव्य-भावना और उत्साह भरना चाहता है।

Quick Tip: रूपक खोलिए, सीता के स्थान पर कौन है, रावण के स्थान पर कौन और राम-लक्ष्मण के स्थान पर कौन। फिर पंक्ति का अर्थ अपने आप स्पष्ट हो जाएगा।

43. निम्नलिखित पठित गद्यांश पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए :

पंछी, मानव, पशु, नदी, पर्वत, समंदर आदि की इसमें बराबर की हिस्सेदारी है। यह और बात है कि इस हिस्सेदारी में मानव जाति ने अपनी बुद्धि से बड़ी-बड़ी दीवारें खड़ी कर दी हैं। पहले पूरा परिवार एक परिवार के समान था, अब टुकड़ों में बँटकर एक दूसरे से दूर हो चुका है। पहले बड़े-बड़े दालानों-आँगनों में सब मिलजुलकर रहते थे, अब छोटे-छोटे डिब्बे जैसे घरों में जीवन सिमटने लगा है। बढ़ती हुई आबादियों ने समंदर को पीछे सरकाना शुरू कर दिया है, पेड़ों को रास्तों से हटाना शुरू कर दिया है, फैलते हुए प्रदूषण ने पंछियों को बस्तियों से भगाना शुरू कर दिया है। बारूद की विनाशलीलाओं ने वातावरण को सताना शुरू कर दिया। अब गरमी में ज़्यादा गरमी, बेवक्त की बरसातें, ज़लज़ले, सैलाब, तूफ़ान और नित नए रोग, मानव और प्रकृति के इसी असंतुलन के परिणाम हैं। नेचर की सहनशक्ति की एक सीमा होती है। नेचर के गुस्से का एक नमूना कुछ साल पहले बंबई में देखने को मिला था और यह नमूना इतना डरावना था कि बंबई निवासी डरकर अपने-अपने पूजा-स्थल में अपने खुदाओं से प्रार्थना करने लगे थे।

Correct Answer: —

44. अपनी बुद्धि से बड़ी-बड़ी दीवारें खड़ी कर देने का आशय है –

(A) धरती पर ऊँची-ऊँची इमारतों का निर्माण

(B) धरती को देश की सीमाओं में बाँधना

(C) प्रकृति के अन्य जीवों और तत्त्वों से दूरी

(D) बुद्धि-बल से प्रकृति को नियंत्रित करना

Correct Answer: (C) प्रकृति के अन्य जीवों और तत्त्वों से दूरी

Solution:

Concept:

- यहाँ 'दीवारें' शब्द लाक्षणिक है, अर्थात ईंट-पत्थर की दीवार नहीं, बल्कि दूरी और अलगाव का प्रतीक।
- आशय जानने के लिए यह देखना चाहिए कि दीवार किन दो पक्षों के बीच खड़ी की गई है।

Step 1: पिछली पंक्ति से संदर्भ लीजिए।
गद्यांश की पहली पंक्ति कहती है कि पंछी, मानव, पशु, नदी, पर्वत और समंदर सबकी इस धरती में **बराबर की हिस्सेदारी** है।
इसके तुरंत बाद कहा गया है कि इस हिस्सेदारी में मानव ने दीवारें खड़ी कर दी हैं।

Step 2: तय कीजिए कि दीवार किसके बीच है।
जब बात हिस्सेदारी की हो रही थी, तो दीवार भी उन्हीं हिस्सेदारों के बीच खड़ी हुई है, अर्थात मानव और प्रकृति के अन्य जीवों तथा तत्त्वों के बीच।

Step 3: आगे के उदाहरणों से पुष्टि कीजिए।
गद्यांश आगे बताता है कि मानव ने समंदर को पीछे सरकाया, पेड़ों को रास्तों से हटाया और प्रदूषण से पंछियों को बस्तियों से भगा दिया।
ये सब मानव द्वारा प्रकृति से बनाई गई दूरी के ही उदाहरण हैं।

Step 4: शेष विकल्पों की जाँच कीजिए।
(A) ऊँची इमारतें दीवार का शाब्दिक अर्थ है, लाक्षणिक नहीं। (B) देश की सीमाओं की बात गद्यांश में है ही नहीं।
(D) प्रकृति को नियंत्रित करना अलग बात है, जबकि यहाँ बात अलगाव की है, नियंत्रण की नहीं।

Final Answer: (C) प्रकृति के अन्य जीवों और तत्त्वों से दूरी

Quick Tip: दीवार का काम अलग करना है। पहले वाली पंक्ति देखिए जिसमें सबकी बराबर हिस्सेदारी बताई गई है, फिर सोचिए कि दीवार किनके बीच खड़ी हुई।

45. बंबई निवासी ईश्वर से प्रार्थना क्यों करने लगे?

(A) ईश्वर की प्रार्थना करना उनका दैनिक कर्म था।

(B) प्रार्थना करके वे अपने-अपने पूजा-स्थलों को बचा सकते थे।

(C) वे अपने तरीके से अपने प्रार्थना की शक्ति परखना चाहते थे।

(D) प्रकृति के कोप को देखकर उन्हें अपना अस्तित्व संकट में लगा।

Correct Answer: (D) प्रकृति के कोप को देखकर उन्हें अपना अस्तित्व संकट में लगा।

Solution:

Concept:

- 'क्यों' वाले प्रश्न में कारण खोजना होता है, और गद्यांश में कारण प्रायः उसी वाक्य से ठीक पहले होता है।
- यहाँ प्रार्थना एक परिणाम है, कारण उससे पहले वाली बात में छिपा है।

Step 1: संबंधित वाक्य पढ़िए।
गद्यांश कहता है कि नेचर के गुस्से का एक नमूना कुछ साल पहले बंबई में देखने को मिला था और **यह नमूना इतना डरावना था** कि बंबई निवासी डरकर प्रार्थना करने लगे।

Step 2: कारण पहचानिए।
'डरकर' शब्द ही कारण बता रहा है। प्रकृति का कोप इतना भयानक था कि लोगों को अपनी जान और अस्तित्व पर संकट दिखाई देने लगा।

Step 3: विकल्प (A) की जाँच कीजिए।
यदि प्रार्थना उनका रोज का काम होती, तो गद्यांश उसे विशेष रूप से न बताता और न ही 'डरकर' शब्द लिखता। यह असाधारण स्थिति थी, दिनचर्या नहीं।

Step 4: विकल्प (B) और (C) की जाँच कीजिए।
पूजा-स्थल बचाने की बात गद्यांश में कहीं नहीं है, वे तो वहाँ प्रार्थना करने गए थे।
प्रार्थना की शक्ति परखने की बात भी गद्यांश में नहीं है, वहाँ केवल भय का उल्लेख है।

Final Answer: (D) प्रकृति के कोप को देखकर उन्हें अपना अस्तित्व संकट में लगा।

Quick Tip: गद्यांश में डरकर शब्द पर ध्यान दीजिए। सोचिए कि लोग किस स्थिति में इस तरह सामूहिक रूप से प्रार्थना करने लगते हैं।

46. निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए विकल्पों से सही उत्तर चुनकर लिखिए :

कथन : मानव और प्रकृति के बीच बढ़ते असंतुलन का मुख्य कारण मानव की बढ़ती स्वार्थपरता है।
कारण : बुद्धि के विकास ने ही मानव को अच्छे-बुरे का ज्ञान करवाया जिससे अंततः पर्यावरण सकारात्मक रूप से प्रभावित हुआ।

(A) कथन और कारण दोनों गलत हैं।
(B) कथन गलत है, लेकिन कारण सही है।
(C) कथन सही है, लेकिन कारण, कथन की गलत व्याख्या करता है।
(D) कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

Correct Answer: (C) कथन सही है, लेकिन कारण, कथन की गलत व्याख्या करता है।

Solution:

Concept:

- दोनों वाक्यों को अलग-अलग परखिए, फिर देखिए कि कारण, कथन का समर्थन कर रहा है या खंडन।
- यहाँ ध्यान देने योग्य शब्द है 'सकारात्मक', जो पूरे कारण का रुख बदल देता है।

Step 1: कथन की जाँच कीजिए।
गद्यांश बताता है कि मानव ने अपनी सुविधा के लिए समंदर को पीछे सरकाया, पेड़ों को रास्तों से हटाया और प्रदूषण फैलाकर पंछियों को भगा दिया।
ये सब स्वार्थ के ही उदाहरण हैं, इसलिए कथन **सही** है।

Step 2: कारण की जाँच कीजिए।
कारण का अंतिम भाग कहता है कि इससे पर्यावरण **सकारात्मक** रूप से प्रभावित हुआ।
गद्यांश ठीक इसका उलटा कहता है, कि इसी असंतुलन से अधिक गरमी, बेवक्त की बरसातें, ज़लज़ले, सैलाब, तूफ़ान और नए रोग पैदा हुए।
अतः कारण **गलत** है।

Step 3: दोनों का संबंध देखिए।
कथन कहता है कि स्थिति बिगड़ी है और कारण कहता है कि स्थिति सुधरी है।
कारण, कथन की सही व्याख्या करने के बजाय उसका खंडन कर रहा है।

Step 4: सही विकल्प चुनिए।
कथन सही है और कारण उसकी गलत व्याख्या कर रहा है, अर्थात विकल्प (C)।

Final Answer: (C) कथन सही है, लेकिन कारण, कथन की गलत व्याख्या करता है।

Quick Tip: कारण के अंतिम शब्द सकारात्मक पर ध्यान दीजिए। गद्यांश में गिनाए गए परिणामों को देखिए और सोचिए कि वे अच्छे हैं या बुरे।

47. प्रकृति के असंतुलन का परिणाम नहीं है

(A) मौसम चक्र में परिवर्तन

(B) विकास-दर में वृद्धि

(C) प्राकृतिक आपदाओं में बढ़ोतरी

(D) नए-नए रोगों की उत्पत्ति

Correct Answer: (B) विकास-दर में वृद्धि

Solution:

Concept:

- यह नकारात्मक प्रश्न है, इसलिए वह विकल्प चुनना है जो गद्यांश में परिणाम के रूप में नहीं आया।
- गद्यांश ने परिणामों की एक स्पष्ट सूची दी है, उसी से मिलान करना है।

Step 1: गद्यांश की सूची देखिए।
गद्यांश कहता है – अब गरमी में ज़्यादा गरमी, बेवक्त की बरसातें, ज़लज़ले, सैलाब, तूफ़ान और नित नए रोग, मानव और प्रकृति के इसी असंतुलन के परिणाम हैं।

Step 2: विकल्प (A) से मिलाइए।
'ज़्यादा गरमी' और 'बेवक्त की बरसातें' ठीक मौसम चक्र में परिवर्तन ही हैं। अतः (A) परिणाम है।

Step 3: विकल्प (C) और (D) से मिलाइए।
ज़लज़ले, सैलाब और तूफ़ान प्राकृतिक आपदाएँ हैं, इसलिए (C) परिणाम है। 'नित नए रोग' सीधे-सीधे (D) से मेल खाता है।

Step 4: विकल्प (B) की जाँच कीजिए।
विकास-दर में वृद्धि का उल्लेख गद्यांश में कहीं नहीं है, और वह प्रकृति के असंतुलन का परिणाम भी नहीं है। यदि कुछ है तो वह असंतुलन का *कारण* हो सकता है,

परिणाम नहीं।

Final Answer: (B) विकास-दर में वृद्धि

Quick Tip: विकल्पों को अच्छे और बुरे में बाँटिए। असंतुलन का परिणाम हानिकारक ही होगा, इसलिए जो विकल्प लाभदायक लगे वही उत्तर है।

48. 'पहले पूरा संसार एक परिवार के समान था' – का भाव है

(A) पहले संसार परिवार की सीमाओं में नहीं बँटा था।

(B) पहले संसार में अलग-अलग देश ही नहीं थे।

(C) पहले लोग मानव और प्रकृति के संबंधों से अनजान थे।

(D) पहले के लोग सह-अस्तित्व का सम्मान करते थे।

Correct Answer: (D) पहले के लोग सह-अस्तित्व का सम्मान करते थे।

Solution:

Concept:

- 'परिवार के समान' कहने का भाव है कि सब मिल-जुलकर, एक-दूसरे का ध्यान रखते हुए रहते थे।
- भाव पूछे जाने पर शब्दों का सीधा अर्थ नहीं, उनके पीछे का संदेश लिखना होता है।

Step 1: गद्यांश के आरंभ से जोड़िए।
गद्यांश की पहली पंक्ति कहती है कि पंछी, मानव, पशु, नदी, पर्वत और समंदर सबकी इस धरती में बराबर की हिस्सेदारी है।
यही सह-अस्तित्व है, अर्थात सबका साथ-साथ रहना।

Step 2: 'पहले' और 'अब' की तुलना देखिए।
गद्यांश बताता है कि पहले बड़े-बड़े दालानों और आँगनों में सब मिलजुलकर रहते थे, अब छोटे-छोटे डिब्बे जैसे घरों में जीवन सिमट गया है।
अर्थात पहले मेल-जोल था, अब अलगाव है।

Step 3: भाव तक पहुँचिए।
इसका भाव यही है कि पहले के लोग एक-दूसरे का और प्रकृति के अन्य जीवों का साथ स्वीकार करते थे तथा उनका सम्मान करते थे।

Step 4: शेष विकल्पों की जाँच कीजिए।
(B) देशों की बात करता है, जो गद्यांश का विषय नहीं है। (C) कहता है कि लोग संबंधों से अनजान थे, जबकि गद्यांश के अनुसार वे तो उन संबंधों को निभा रहे थे। (A) आधा सही है पर यह केवल बँटवारे की बात करता है, सम्मान का भाव छोड़ देता है।

Final Answer: (D) पहले के लोग सह-अस्तित्व का सम्मान करते थे।

Quick Tip: सह-अस्तित्व का अर्थ है साथ-साथ रहना। गद्यांश की पहली पंक्ति में सबकी बराबर हिस्सेदारी वाली बात से इसे जोड़िए।

49. वामीरो के बार-बार इंकार और उपेक्षा के बाद भी तताँरा उससे अपना गाना पूरा करने का आग्रह करता रहा, यहाँ तक कि उसका रास्ता रोककर खड़ा हो गया। वर्तमान में यदि कोई ऐसा करे तो क्या आप उसे उचित मानेंगे?

Correct Answer: —

Solution:

Concept:

- यह मूल्यपरक प्रश्न है, इसमें केवल कहानी दोहराना काफी नहीं। अपना मत देकर उसका कारण भी बताना है।
- ऐसे उत्तर में पहले पाठ की स्थिति, फिर आज का संदर्भ, और अंत में स्पष्ट निर्णय लिखना चाहिए।

Step 1: पाठ की स्थिति संक्षेप में रखिए।
'तताँरा-वामीरो कथा' एक लोककथा है। तताँरा वामीरो के सुंदर गीत से मुग्ध हो जाता है और बार-बार उससे गाना पूरा करने का आग्रह करता है।

Step 2: आज के संदर्भ में उसका व्यवहार परखिए।
आज के समय में किसी का बार-बार मना करने पर भी पीछा करना या उसका रास्ता रोककर खड़ा हो जाना उचित नहीं माना जा सकता।
यह दूसरे व्यक्ति की **सहमति और स्वतंत्रता** का उल्लंघन है।

Step 3: कारण स्पष्ट कीजिए।
किसी को अच्छा लगना अपनी भावना है, पर उस भावना को दूसरे पर थोपने का अधिकार किसी को नहीं। मना कर देने के बाद भी आग्रह करते रहना सामने वाले के लिए भय और असुविधा पैदा करता है।
आज ऐसा व्यवहार सामाजिक रूप से अनुचित है और कानूनी रूप से भी आपत्तिजनक माना जाता है।

Step 4: संतुलित निष्कर्ष दीजिए।
लोककथा में यह प्रसंग प्रेम की तीव्रता दिखाने के लिए है, पर उसे आज के जीवन का आदर्श नहीं बनाया जा सकता। सच्चा स्नेह वही है जो दूसरे की इच्छा का सम्मान करे।

Final Answer: नहीं, आज के समय में ऐसा व्यवहार उचित नहीं माना जाएगा। किसी के बार-बार मना करने पर भी आग्रह करते रहना और रास्ता रोक लेना उसकी सहमति और स्वतंत्रता का उल्लंघन है। लोककथा में यह प्रसंग प्रेम की गहराई दिखाने के लिए है, पर वास्तविक जीवन में सच्चा स्नेह दूसरे की इच्छा का सम्मान करने में ही है।

Quick Tip: अपना मत स्पष्ट लिखिए और कारण भी दीजिए। ध्यान रखिए कि भावना अच्छी होने भर से व्यवहार उचित नहीं हो जाता, सामने वाले की सहमति भी आवश्यक है।

50. 'गिन्नी का सोना' पाठ पाठकों को एक जागरूक और सक्रिय नागरिक बनने की प्रेरणा देता है। कथन के पक्ष में अपने विचार लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

Concept:

- 'गिन्नी का सोना' यतीन्द्र मिश्र के निबंध-संग्रह का पाठ है, जिसमें शुद्ध सोने और गिन्नी के सोने के रूपक से आदर्शवादी और व्यावहारिक लोगों की तुलना की गई है।
- प्रश्न कथन के *पक्ष* में विचार माँग रहा है, इसलिए उत्तर में समर्थन के तर्क देने हैं।

Step 1: पाठ का मूल रूपक समझाइए।
शुद्ध सोना अकेला नरम होता है, उसमें ताँबा मिलाने पर वह गिन्नी का सोना बनकर मजबूत हो जाता है। इसी तरह आदर्श में थोड़ी व्यावहारिकता मिलाने पर वह जीवन में चल पाता है।

Step 2: पहला पक्ष, आदर्शों को जीवन में उतारने की प्रेरणा।
पाठ बताता है कि केवल आदर्श की बात करना काफी नहीं, उसे व्यवहार में लाना आवश्यक है। गांधी जी इसका उदाहरण हैं, जिन्होंने व्यावहारिकता को पहचानते हुए भी अपने आदर्श नहीं छोड़े।
यही एक सक्रिय नागरिक का गुण है।

Step 3: दूसरा पक्ष, स्वार्थ और लाभ-हानि की सोच से बचने की सीख।
पाठ चेतावनी देता है कि जो लोग केवल लाभ-हानि देखकर चलते हैं, वे समाज को

नीचे की ओर ले जाते हैं। यह पाठक को सचेत करता है कि वह अपने निर्णय केवल अपने फायदे से न ले।

Step 4: तीसरा पक्ष, समाज के प्रति उत्तरदायित्व।
पाठ यह भी सिखाता है कि आदर्श किसी एक व्यक्ति की संपत्ति नहीं होते, वे पूरे समाज को दिशा देते हैं। इस समझ से नागरिक अपने आसपास की समस्याओं के प्रति जागरूक और सक्रिय बनता है।

Final Answer: यह कथन सही है, क्योंकि पाठ सिखाता है कि आदर्शों को व्यवहार में उतारना चाहिए, केवल लाभ-हानि देखकर नहीं चलना चाहिए, और समाज के प्रति अपना उत्तरदायित्व निभाना चाहिए। यही जागरूक और सक्रिय नागरिक के गुण हैं।

Quick Tip: शुद्ध सोने और गिन्नी के सोने वाले रूपक से शुरू कीजिए, फिर बताइए कि पाठ आदर्शों को व्यवहार में उतारने और केवल अपना लाभ न देखने की सीख कैसे देता है।

51. 'तीसरी कसम' जैसी साहित्यिक और कलात्मक फ़िल्मों की व्यावसायिक सफलता संदिग्ध क्यों हो जाती है?

Correct Answer: —

Solution:

Concept:

- 'तीसरी कसम के शिल्पकार शैलेंद्र' पाठ में बताया गया है कि यह फ़िल्म कलात्मक दृष्टि से उत्कृष्ट थी, फिर भी उसे वितरक नहीं मिले।
- प्रश्न कारण पूछ रहा है, इसलिए उत्तर में व्यवसाय और कला के टकराव को स्पष्ट करना है।

Step 1: पहला कारण, दर्शक की आदत।
अधिकांश दर्शक फ़िल्म को केवल मनोरंजन का साधन मानते हैं। वे नाच-गाना, मारधाड़ और चमक-दमक देखना चाहते हैं।
साहित्यिक फ़िल्में इन सबसे दूर रहकर संवेदना और यथार्थ पर टिकी होती हैं, इसलिए वे भीड़ नहीं खींच पातीं।

Step 2: दूसरा कारण, वितरक और निर्माता का भय।
वितरक वही फ़िल्म लेना चाहता है जिसमें पैसा लौटने की गारंटी हो। कलात्मक फ़िल्म का परिणाम अनिश्चित रहता है, इसलिए उसे खरीदने से लोग कतराते हैं।
'तीसरी कसम' के साथ ठीक यही हुआ, उसे वितरक ही नहीं मिल रहे थे।

Step 3: तीसरा कारण, प्रचार और वितरण की कमी।
बड़ी फ़िल्मों की तरह इन फ़िल्मों का प्रचार नहीं होता और इन्हें अच्छे सिनेमाघर तथा अच्छा समय नहीं मिलता। दर्शक तक पहुँचने से पहले ही फ़िल्म पीछे रह जाती है।

Step 4: चौथा कारण, सफलता का पैमाना ही अलग है।
ऐसी फ़िल्में कला की कसौटी पर खरी उतरती हैं, कमाई की कसौटी पर नहीं। 'तीसरी कसम' को राष्ट्रपति स्वर्ण पदक मिला, पर व्यावसायिक दृष्टि से उसे सफल नहीं कहा गया।

Final Answer: ऐसी फ़िल्मों की व्यावसायिक सफलता इसलिए संदिग्ध रहती है क्योंकि अधिकांश दर्शक केवल मनोरंजन चाहते हैं, वितरक जोखिम लेने से बचते हैं, प्रचार और अच्छे सिनेमाघर नहीं मिलते, और इन फ़िल्मों की असली कसौटी कमाई नहीं बल्कि कला होती है।

Quick Tip: कला और व्यापार के अलग-अलग उद्देश्यों से शुरू कीजिए, फिर दर्शक की पसंद, वितरक का जोखिम और प्रचार की कमी को कारण के रूप में लिखिए।

52. 'डायरी का एक पन्ना' के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि प्रतीकात्मक समारोह एवं घटनाएँ भी सच्ची भावनाओं को जन्म दे सकती हैं।

Correct Answer: —

Solution:

Concept:

- 'डायरी का एक पन्ना' सीताराम सेकसरिया की डायरी का अंश है, जिसमें 26 जनवरी 1931 को कलकत्ता में मनाए गए स्वाधीनता दिवस का वर्णन है।
- प्रतीकात्मक समारोह का अर्थ है ऐसा आयोजन जिससे तुरंत कोई भौतिक लाभ न हो, पर जो किसी भाव का प्रतीक हो।

Step 1: समारोह की प्रतीकात्मकता समझाइए।
उस दिन देश स्वतंत्र नहीं हुआ था। झंडा फहराना और स्वाधीनता की प्रतिज्ञा पढ़ना केवल एक प्रतीक था, कोई सत्ता परिवर्तन नहीं।

Step 2: फिर भी लोगों की भागीदारी देखिए।
इसके बावजूद मानो सारा शहर उमड़ पड़ा। मॉनुमेंट के नीचे हजारों लोग एकत्र हुए और लोगों ने पहले कभी इतनी बड़ी सभा नहीं देखी थी।
लोग स्वयं आए, किसी के कहने पर नहीं।

Step 3: भावना की सच्चाई के प्रमाण दीजिए।
पुलिस की लाठियाँ चलीं, फिर भी लोग पीछे नहीं हटे। स्त्रियों ने आगे बढ़कर जुलूस निकाला, गिरफ्तारियाँ दीं और मार खाई।
कोई नकली भावना इतना कष्ट सहन नहीं करा सकती।

Step 4: निष्कर्ष निकालिए।
इससे सिद्ध होता है कि प्रतीक भी सच्ची भावना जगा सकते हैं। झंडा केवल कपड़े का टुकड़ा है, पर वह जिस भाव का प्रतीक बन जाता है, उसके लिए लोग प्राण तक देने को तैयार हो जाते हैं।

Final Answer: 26 जनवरी 1931 का आयोजन केवल प्रतीकात्मक था, क्योंकि उस दिन देश स्वतंत्र नहीं हुआ था। फिर भी हजारों लोग स्वयं उमड़ पड़े, लाठियाँ खाईं, गिरफ्तारियाँ दीं और स्त्रियाँ तक आगे आईं। यह सिद्ध करता है कि प्रतीकात्मक समारोह भी सच्ची और गहरी भावनाओं को जन्म दे सकते हैं।

Quick Tip: पहले बताइए कि 26 जनवरी 1931 का आयोजन प्रतीकात्मक ही था, फिर लिखिए कि लोगों ने उसके लिए लाठियाँ और गिरफ्तारियाँ तक सहीं, जो सच्ची भावना का प्रमाण है।

53. 'जिनसे अपनापन मिले, अपने वे ही होते हैं फिर चाहे वे अलग परिवार, जाति, धर्म के ही क्यों न हों।' – 'टोपी शुक्ला' पाठ के आधार पर इस कथन के पक्ष में अपने विचार व्यक्त कीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

Concept:

- 'टोपी शुक्ला' राही मासूम रज़ा की रचना है, जिसमें एक हिंदू बालक बलभद्र नारायण शुक्ला और एक मुसलमान वृद्धा इफ़्फ़न की दादी के स्नेह-संबंध की कथा है।
- कथन के पक्ष में लिखना है, इसलिए पाठ से ऐसे प्रसंग चुनने हैं जो इसे सिद्ध करें।

Step 1: टोपी की घरेलू स्थिति बताइए।
टोपी अपने ही घर में उपेक्षित था। दादी उसे डाँटती थीं, माँ का ध्यान नहीं मिलता था और भाई भी उसका मजाक उड़ाते थे।
अपने खून के रिश्तों में भी उसे अपनापन नहीं मिला।

Step 2: इफ़्फ़न की दादी से मिले स्नेह का वर्णन कीजिए।
इसके विपरीत इफ़्फ़न की दादी उसे बहुत प्यार करती थीं। वे उसकी बातें ध्यान से सुनतीं, उसे खाने को देतीं और उसका मन रखतीं।
टोपी को वहीं वह अपनापन मिला जो अपने घर में नहीं मिला।

Step 3: धर्म और जाति की दीवार टूटने का प्रसंग दीजिए।
टोपी ब्राह्मण परिवार का था और इफ़्फ़न का परिवार मुसलमान था, फिर भी दोनों के बीच गहरी मित्रता रही।
टोपी ने तो यहाँ तक कह दिया था कि वह अपनी दादी बदलकर इफ़्फ़न की दादी ले लेना चाहता है। यह वाक्य पूरे कथन का सार है।

Step 4: अपना मत जोड़कर निष्कर्ष लिखिए।
इससे स्पष्ट है कि रिश्ते जन्म से नहीं, व्यवहार से बनते हैं। जहाँ स्नेह, सम्मान और समझ मिलती है, वही अपना हो जाता है।
दादी के निधन के बाद टोपी को जो गहरा सूनापन लगा, वह भी यही सिद्ध करता है कि वह संबंध कितना सच्चा था।

Final Answer: यह कथन पूरी तरह सही है। टोपी को अपने घर में, अपने ही धर्म और परिवार में अपनापन नहीं मिला, जबकि दूसरे धर्म की इफ़्फ़न की दादी ने उसे सच्चा स्नेह दिया। इसी कारण वह उन्हें अपनी दादी से अधिक अपना मानता था। इससे सिद्ध होता है कि अपनापन जाति, धर्म या रक्त-संबंध से नहीं, बल्कि प्रेम और व्यवहार से जन्म लेता है।

Quick Tip: तुलना करके लिखिए। एक ओर टोपी को अपने घर में मिली उपेक्षा और दूसरी ओर इफ़्फ़न की दादी से मिला स्नेह, और उसका दादी बदलने वाला कथन भी जोड़िए।

54. 'सपनों के से दिन' पाठ में लेखक और उन जैसे परिवारों की अपने बच्चों को पढ़वाने में अरुचि के क्या कारण रहे होंगे? क्या वर्तमान में भी बच्चों की पढ़ाई को लेकर समान दृष्टिकोण है? अपने विचार के पक्ष में तर्कपूर्ण उत्तर लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

Concept:

- 'सपनों के से दिन' गुरदयाल सिंह की रचना है, जिसमें लेखक अपने बचपन और उस समय के स्कूली जीवन को याद करता है।
- प्रश्न के तीन भाग हैं – उस समय के कारण, आज की स्थिति, और अपना तर्कसंगत मत।

Step 1: पहला कारण, शिक्षा का तत्काल लाभ न दिखना।
उस समय अधिकांश परिवार खेती या छोटे काम-धंधों से जुड़े थे। माता-पिता को लगता था कि पढ़ाई से कोई सीधा लाभ नहीं, बच्चा खेत या दुकान पर काम करे तो तुरंत सहायता मिलेगी।

Step 2: दूसरा कारण, आर्थिक कठिनाई।
किताबें, कपड़े और फीस का खर्च उन परिवारों के लिए भारी था। जब घर चलाना ही कठिन हो, तो पढ़ाई विलासिता लगने लगती है।

Step 3: तीसरा कारण, स्कूल का डरावना वातावरण।
लेखक बताता है कि मास्टर प्रीतमचंद जैसे अध्यापक बच्चों को कठोर दंड देते थे।
खाल उधेड़ देने वाली पिटाई के कारण बच्चे स्कूल से भागते थे।
जब बच्चा स्कूल जाने से रोता हो, तो माता-पिता भी जोर नहीं देते थे।

Step 4: अब वर्तमान की स्थिति पर अपना मत दीजिए।
आज दृष्टिकोण काफी बदल गया है। शिक्षा को रोजगार और उन्नति का मुख्य साधन माना जाता है, शिक्षा का अधिकार कानून बना है, मध्याह्न भोजन और छात्रवृत्तियाँ

मिलती हैं, और शारीरिक दंड पर रोक है।
अब अधिकांश माता-पिता स्वयं चाहते हैं कि उनके बच्चे पढ़ें।

Step 5: संतुलित निष्कर्ष लिखिए।
फिर भी परिवर्तन पूर्ण नहीं है। आज भी कुछ क्षेत्रों में गरीबी और बाल-श्रम के कारण बच्चे बीच में पढ़ाई छोड़ देते हैं। इसलिए कहा जा सकता है कि दृष्टिकोण काफी बदला है, पर पूरी तरह नहीं।

Final Answer: उस समय अरुचि के कारण थे शिक्षा का तत्काल लाभ न दिखना, आर्थिक तंगी और स्कूल का कठोर दंड वाला वातावरण। आज स्थिति काफी बदल गई है, क्योंकि शिक्षा को रोजगार का साधन माना जाता है, कानूनी अधिकार और सुविधाएँ मिली हैं तथा शारीरिक दंड पर रोक है। फिर भी गरीबी और बाल-श्रम के कारण कुछ जगह आज भी यह समस्या बनी हुई है।

Quick Tip: उत्तर को दो भागों में बाँटिए, पहले उस समय के कारण जैसे गरीबी और मास्टर की पिटाई, फिर आज की बदली स्थिति, और अंत में अपना मत कारण सहित लिखिए।

55. ठाकुरबारी में महंत जी की नियुक्ति अस्थायी थी फिर भी उन्होंने हरिहर काका की ज़मीन को ठाकुर जी के नाम करवाने के लिए हर तरह के हथकंडे अपनाए। उनके द्वारा किए जाने वाले इन कृत्यों के पीछे के संभावित कारणों का उल्लेख कीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

Concept:

- 'हरिहर काका' मिथिलेश्वर की कहानी है, जिसमें धर्म के नाम पर चलने वाले स्वार्थ को उजागर किया गया है।
- प्रश्न 'संभावित कारण' पूछ रहा है, इसलिए उत्तर में महंत जी की मंशा का विश्लेषण करना है।

Step 1: पहला कारण, व्यक्तिगत स्वार्थ और लोभ।
ठाकुरबारी की संपत्ति भले ही ठाकुर जी के नाम होती हो, पर उसका भोग महंत और उनके साथी ही करते थे। ज़मीन बढ़ने का सीधा अर्थ था उनकी अपनी आय और सुविधा बढ़ना।

Step 2: दूसरा कारण, पद अस्थायी होने के कारण जल्दी लाभ उठाने की चाह।
नियुक्ति अस्थायी थी, अर्थात कभी भी हटाया जा सकता था। इसलिए वे जितना जल्दी हो सके उतनी संपत्ति ठाकुरबारी के नाम कर लेना चाहते थे, ताकि अपने कार्यकाल में अधिक से अधिक लाभ उठा सकें।

Step 3: तीसरा कारण, प्रतिष्ठा और प्रभाव बढ़ाना।
ठाकुरबारी के पास जितनी अधिक ज़मीन होती, गाँव में उसका दबदबा उतना ही अधिक होता। इससे महंत जी की अपनी प्रतिष्ठा भी बढ़ती और लोग उनसे और अधिक डरते तथा दबते।

Step 4: चौथा कारण, धर्म का दुरुपयोग सरल था।
लोगों की धार्मिक आस्था के कारण ठाकुरबारी पर कोई प्रश्न नहीं उठाता था। महंत जानते थे कि ठाकुर जी के नाम पर की गई माँग को ठुकराना गाँव वालों के लिए कठिन होगा।
इसी विश्वास का लाभ उठाकर उन्होंने पहले प्रलोभन दिया, फिर अपहरण और बलपूर्वक हस्ताक्षर तक करवाने का प्रयास किया।

Final Answer: महंत जी के इन कृत्यों के पीछे व्यक्तिगत लोभ, अस्थायी पद के कारण शीघ्र लाभ उठाने की जल्दबाजी, गाँव में अपना प्रभाव और प्रतिष्ठा बढ़ाने की इच्छा, तथा लोगों की धार्मिक आस्था का दुरुपयोग करने की सुविधा, ये सब कारण रहे होंगे।

Quick Tip: सोचिए कि ज़मीन ठाकुरबारी के नाम होने से महंत जी को क्या-क्या मिलता, धन, प्रभाव और पद की सुरक्षा। साथ ही यह भी कि धार्मिक आस्था उनके लिए ढाल कैसे बनी।

56. आप उत्कर्ष/प्रगति हैं। वर्तमान में तेज़ी से बदलते परिप्रेक्ष्य में किशोरों को आजीविका (करियर) संबंधी मार्गदर्शन की नितांत आवश्यकता है। इस विषय पर आधारित श्रृंखला शुरू किए जाने का निवेदन करते हुए दूरदर्शन निदेशालय को लगभग 80 शब्दों में एक ई-मेल लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

Concept:

- ई-मेल का निश्चित प्रारूप होता है – प्रेषक, प्राप्तकर्ता, विषय, संबोधन, मुख्य भाग और अंत में नाम।
- यह औपचारिक ई-मेल है, इसलिए भाषा शिष्ट और सीधी होनी चाहिए तथा शब्द-सीमा का ध्यान रखना चाहिए।

Step 1: प्रारूप के अंग तय कीजिए।
सेवा में का स्थान यहाँ प्रेषक और प्राप्तकर्ता की ई-मेल आईडी ले लेती है। उसके बाद विषय आता है, जो एक पंक्ति में पूरा उद्देश्य बता दे।

Step 2: मुख्य भाग की योजना बनाइए।
पहला अनुच्छेद – समस्या बताइए, कि किशोरों को करियर की सही जानकारी नहीं मिल पाती।
दूसरा अनुच्छेद – सुझाव दीजिए, कि इस विषय पर एक श्रृंखला आरंभ की जाए।
तीसरा अनुच्छेद – निवेदन और आभार।

Step 3: भाषा का ध्यान रखिए।
औपचारिक ई-मेल में न तो बहुत भावुक भाषा चाहिए और न ही शिकायत का स्वर। निवेदन का विनम्र स्वर ही उपयुक्त है।

Step 4: शब्द-सीमा संभालिए।
लगभग 80 शब्द का अर्थ है छोटे-छोटे वाक्य और केवल आवश्यक बातें। विस्तार से बचिए।

Final Answer:
प्रेषक : utkarsh2026@email.com
प्रेषिती : directorate@doordarshan.gov.in
विषय : किशोरों के लिए करियर मार्गदर्शन शृंखला आरंभ किए जाने हेतु निवेदन

महोदय,

आज का समय तेजी से बदल रहा है और नए-नए क्षेत्र खुल रहे हैं। ऐसे में अधिकांश किशोर यह तय नहीं कर पाते कि उन्हें किस दिशा में जाना चाहिए। गाँवों और छोटे शहरों में तो सही मार्गदर्शन मिलना और भी कठिन है।

मेरा विनम्र निवेदन है कि दूरदर्शन पर करियर मार्गदर्शन पर आधारित एक साप्ताहिक शृंखला आरंभ की जाए, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ छात्रों का मार्गदर्शन करें। इससे लाखों विद्यार्थी लाभान्वित होंगे।

आशा है आप इस सुझाव पर विचार करेंगे।

सधन्यवाद,
उत्कर्ष

Quick Tip: ई-मेल का प्रारूप पूरा लिखिए, प्रेषक, प्रेषिती, विषय, संबोधन, मुख्य भाग और नाम। मुख्य भाग में पहले समस्या, फिर सुझाव और अंत में लाभ बताइए।

57. 'जाड़े की शाम थी। आज रोज़ की तुलना में कोहरा अधिक ही घना था। मैं अपनी नृत्य-कक्षा से लौट रहा था।' ..... – पंक्ति को आधार बनाकर लगभग 100 शब्दों में एक लघुकथा लिखिए।

Correct Answer: –

Solution:

Concept:

- लघुकथा बहुत छोटी कहानी होती है, जिसमें एक ही घटना, कम पात्र और अंत में कोई मोड़ या संदेश होता है।
- दी गई पंक्ति से ही कथा आरंभ करनी है, उसे बदलना नहीं है।

Step 1: दी गई पंक्ति से वातावरण पकड़िए।
पंक्ति में जाड़े की शाम, घना कोहरा और अकेले लौटता हुआ पात्र है। यह वातावरण किसी अप्रत्याशित घटना के लिए तैयार करता है।

Step 2: एक ही घटना चुनिए।
लघुकथा में कई घटनाएँ नहीं डालनी चाहिए। एक ही घटना लीजिए, जैसे रास्ते में किसी असहाय व्यक्ति का मिलना।

Step 3: अंत में मोड़ या संदेश रखिए।
लघुकथा की शक्ति उसके अंत में होती है। अंत ऐसा हो कि पाठक कुछ सोचने लगे।

Step 4: शब्द-सीमा और शीर्षक का ध्यान रखिए।
लगभग 100 शब्द में कथा समेटिए और ऊपर एक उपयुक्त शीर्षक अवश्य दीजिए।

Final Answer:
शीर्षक : कोहरे में उजाला

जाड़े की शाम थी। आज रोज़ की तुलना में कोहरा अधिक ही घना था। मैं अपनी नृत्य-

कक्षा से लौट रहा था। सड़क लगभग सूनी थी और हाथ को हाथ नहीं सूझ रहा था। तभी किनारे बैठी एक बुढ़िया दिखाई दी, जो ठंड से काँप रही थी। मेरे पैर ठिठक गए। मन ने कहा, देर हो रही है, आगे बढ़ो। पर दूसरी आवाज ने रोक लिया। मैंने अपना शॉल उतारकर उसे ओढ़ा दिया और पास की चाय की दुकान से एक गिलास गरम चाय दिलवाई। उसने काँपते हाथों से चाय थामी और मेरे सिर पर हाथ रख दिया। उस क्षण मुझे लगा, कोहरा तो अब भी वैसा ही था, पर भीतर कहीं उजाला हो गया था।

Quick Tip: दी गई पंक्ति से ही शुरुआत कीजिए, एक ही घटना लीजिए, बीच में पात्र का द्वंद्व दिखाइए और अंत में कोई संदेश देने वाली पंक्ति रखिए। शीर्षक देना न भूलिए।

58. निम्नलिखित विषय पर दिए गए संकेत-बिंदुओं के आधार पर लगभग 120 शब्दों में एक अनुच्छेद लिखिए :

परिश्रम सफलता की कुंजी है

संकेत बिंदु : सूक्ति का अर्थ • विद्यार्थी जीवन में महत्त्व • वर्तमान में इसकी आवश्यकता क्यों

Correct Answer: —

Solution:

Concept:

- अनुच्छेद एक ही अनुच्छेद में लिखा जाता है, उसमें उपशीर्षक या बिंदु नहीं बनाए जाते।
- दिए गए तीनों संकेत-बिंदुओं को क्रम से उठाना आवश्यक है, तभी पूरे अंक मिलते हैं।

Step 1: पहला संकेत बिंदु, सूक्ति का अर्थ।

कुंजी अर्थात चाबी। जैसे बंद ताला चाबी से ही खुलता है, वैसे ही सफलता का द्वार परिश्रम से ही खुलता है। यही इस सूक्ति का अर्थ है।

Step 2: दूसरा संकेत बिंदु, विद्यार्थी जीवन में महत्त्व।
विद्यार्थी के लिए परिश्रम ही सबसे बड़ी पूँजी है। नियमित अध्ययन, अभ्यास और अनुशासन से ही ज्ञान स्थायी बनता है।

Step 3: तीसरा संकेत बिंदु, आज इसकी आवश्यकता क्यों।
आज प्रतिस्पर्धा बहुत बढ़ गई है और हर क्षेत्र में अवसरों से अधिक उम्मीदवार हैं। साथ ही मोबाइल और मनोरंजन के साधनों ने ध्यान भटकाना आसान कर दिया है।

Step 4: अंत में निष्कर्ष जोड़िए।
एक-दो पंक्ति में यह बताइए कि परिश्रम का कोई विकल्प नहीं है।

Final Answer:
परिश्रम सफलता की कुंजी है

कुंजी अर्थात चाबी। जैसे बंद ताला चाबी के बिना नहीं खुलता, वैसे ही सफलता का द्वार परिश्रम के बिना नहीं खुलता। यही इस सूक्ति का आशय है। संसार में जितने भी महान व्यक्ति हुए हैं, उनकी सफलता के पीछे भाग्य नहीं, अथक परिश्रम रहा है। विद्यार्थी जीवन में तो परिश्रम का महत्त्व और भी अधिक है, क्योंकि यही वह समय है जब भविष्य की नींव रखी जाती है। नियमित अध्ययन, निरंतर अभ्यास और अनुशासन से ही ज्ञान स्थायी बनता है। आज के समय में इसकी आवश्यकता पहले से कहीं अधिक है, क्योंकि प्रतिस्पर्धा बहुत बढ़ गई है और अवसरों की तुलना में उम्मीदवार कहीं अधिक हैं। साथ ही मोबाइल और मनोरंजन के साधनों ने ध्यान भटकाना बहुत आसान कर दिया है। ऐसे में जो विद्यार्थी परिश्रम का मार्ग चुनता है, वही आगे बढ़ पाता है। अतः यह कहना उचित है कि परिश्रम का कोई विकल्प नहीं।

Quick Tip: तीनों संकेत-बिंदुओं को क्रम से लीजिए, सूक्ति का अर्थ, विद्यार्थी जीवन में महत्त्व, और आज की आवश्यकता। एक ही अनुच्छेद में लिखिए, बिंदु मत बनाइए।

59. निम्नलिखित विषय पर दिए गए संकेत-बिंदुओं के आधार पर लगभग 120 शब्दों में एक अनुच्छेद लिखिए :

भीड़ भरे बाज़ार का दृश्य
संकेत बिंदु : चारों तरफ लोगों की गरमागरमी • दुकानदारों की आवाज • खरीद-फरोख़्त करते लोग

Correct Answer: —

Solution:

Concept:

- यह वर्णनात्मक अनुच्छेद है, इसलिए इसमें तर्क नहीं, दृश्य चित्रित करना है।
- अच्छा वर्णन वह है जिसमें आँख, कान और स्पर्श तीनों का अनुभव आए, जिससे पाठक को लगे कि वह स्वयं वहाँ खड़ा है।

Step 1: पहला संकेत बिंदु, चारों तरफ की गरमागरमी।
भीड़ का धक्का-मुक्की भरा माहौल, तेज चलते लोग, मोल-भाव करते ग्राहक और कहीं-कहीं होती छोटी-मोटी बहस।

Step 2: दूसरा संकेत बिंदु, दुकानदारों की आवाज।
हर दुकानदार अपनी वस्तु की प्रशंसा करता हुआ पुकार रहा है, कोई सस्ते दाम बता रहा है तो कोई गुणवत्ता की गारंटी दे रहा है।

Step 3: तीसरा संकेत बिंदु, खरीद-फरोख़्त करते लोग।
कोई कपड़े देख रहा है, कोई सब्जी तौलवा रहा है, कोई बच्चे के लिए खिलौना मोल कर रहा है। थैले भरे हाथ और थके चेहरे भी दिखाई देते हैं।

Step 4: अंत में समग्र प्रभाव लिखिए।

अंत में एक-दो पंक्ति में यह बताइए कि यह दृश्य कैसा लगा और उससे क्या अनुभव हुआ।

Final Answer:
भीड़ भरे बाज़ार का दृश्य

त्योहार निकट था, इसलिए बाज़ार खचाखच भरा हुआ था। चारों तरफ लोगों की गरमागरमी थी। कहीं धक्का-मुक्की हो रही थी तो कहीं दाम को लेकर तीखी बहस चल रही थी। पैर रखने तक की जगह नहीं थी और आगे बढ़ने के लिए भीड़ को चीरना पड़ रहा था। दुकानदार ऊँची आवाज में ग्राहकों को पुकार रहे थे। कोई कह रहा था कि यहाँ सबसे सस्ता माल है तो कोई अपनी वस्तु की गुणवत्ता की गारंटी दे रहा था। इन आवाजों में रेहड़ी वालों की पुकार भी घुली हुई थी। लोग जमकर खरीद-फरोख़्त कर रहे थे। कोई कपड़े उलट-पलटकर देख रहा था, कोई सब्जी तौलवा रहा था और कोई बच्चे के लिए खिलौने का मोल कर रहा था। थैलों से लदे हाथ और थके किंतु संतुष्ट चेहरे सर्वत्र दिखाई दे रहे थे। यह दृश्य जीवन की धड़कन का सच्चा चित्र लगा।

Quick Tip: यह वर्णन है, तर्क नहीं। पहले जो दिखता है, फिर जो सुनाई देता है, फिर जो महसूस होता है, इसी क्रम से लिखिए और तीनों संकेत-बिंदु अवश्य लाइए।

60. निम्नलिखित विषय पर दिए गए संकेत-बिंदुओं के आधार पर लगभग 120 शब्दों में एक अनुच्छेद लिखिए :

ऑनलाइन भुगतान की सुविधा
संकेत बिंदु : भुगतान करने का नया तरीका • देश की अर्थव्यवस्था में सहायक • सावधानी अपेक्षित

Correct Answer: —

Solution:

Concept:

- यह विषय आज के जीवन से जुड़ा है, इसलिए अनुच्छेद में ठोस उदाहरण देने से उत्तर अधिक प्रभावशाली बनता है।
- तीसरा संकेत बिंदु सावधानी का है, इसलिए केवल प्रशंसा करके अनुच्छेद समाप्त नहीं करना चाहिए।

Step 1: पहला संकेत बिंदु, भुगतान का नया तरीका।
अब जेब में नकद रखने की आवश्यकता नहीं रही। मोबाइल से क्यूआर कोड स्कैन करके या यूपीआई से कुछ ही क्षणों में भुगतान हो जाता है।

Step 2: दूसरा संकेत बिंदु, अर्थव्यवस्था में सहायक।
हर लेनदेन का रिकॉर्ड बनता है, जिससे पारदर्शिता बढ़ती है और कर-चोरी घटती है। छोटे दुकानदार और रेहड़ी वाले भी इसका लाभ उठा रहे हैं, जिससे वे औपचारिक अर्थव्यवस्था से जुड़ गए हैं।

Step 3: तीसरा संकेत बिंदु, सावधानी।
ठगी के नए तरीके भी बढ़े हैं। अनजान लिंक पर क्लिक करना, किसी को ओटीपी या पिन बताना और असुरक्षित नेटवर्क का प्रयोग करना भारी पड़ सकता है।

Step 4: संतुलित निष्कर्ष लिखिए।
अंत में बताइए कि सुविधा का लाभ तभी है जब सतर्कता के साथ उसका प्रयोग किया जाए।

Final Answer:
ऑनलाइन भुगतान की सुविधा

पिछले कुछ वर्षों में भुगतान का तरीका पूरी तरह बदल गया है। अब जेब में नकद रखने की आवश्यकता नहीं रह गई। मोबाइल से क्यूआर कोड स्कैन करके या यूपीआई के माध्यम से कुछ ही क्षणों में भुगतान हो जाता है। न खुले पैसे का झंझट

रहता है और न लंबी कतारों का। यह सुविधा देश की अर्थव्यवस्था के लिए भी सहायक सिद्ध हुई है, क्योंकि हर लेनदेन का रिकॉर्ड बनने से पारदर्शिता बढ़ती है और कर-चोरी पर अंकुश लगता है। छोटे दुकानदार और रेहड़ी वाले भी इससे जुड़कर औपचारिक अर्थव्यवस्था का हिस्सा बन गए हैं। किंतु इसके साथ सावधानी भी अत्यंत आवश्यक है। ठगी के नए-नए तरीके सामने आ रहे हैं, इसलिए अनजान लिंक पर क्लिक नहीं करना चाहिए और अपना पिन या ओटीपी किसी को नहीं बताना चाहिए। सतर्कता के साथ प्रयोग करने पर ही यह सुविधा वास्तव में वरदान है।

Quick Tip: तीनों संकेत-बिंदुओं को बराबर स्थान दीजिए। केवल लाभ गिनाकर मत रुकिए, तीसरा बिंदु सावधानी का है, इसलिए व्यावहारिक सुझाव भी लिखिए।

61. निम्नलिखित विषय पर लगभग 100 शब्दों में औपचारिक पत्र लिखिए :

आप दसवीं कक्षा के विद्यार्थी शोभा/शोभित हैं। विद्यालय में योग की कक्षाओं की नियमित व्यवस्था हेतु प्रधानाचार्य को एक पत्र लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

Concept:

- औपचारिक पत्र का निश्चित प्रारूप होता है – सेवा में, पदनाम, विद्यालय का नाम, विषय, संबोधन, मुख्य भाग, समापन, नाम और दिनांक।
- प्रारूप के अंक अलग से होते हैं, इसलिए उसे छोड़ना नहीं चाहिए।

Step 1: विषय पंक्ति स्पष्ट लिखिए।
विषय एक पंक्ति में पूरा उद्देश्य बताए, जैसे – विद्यालय में योग कक्षाओं की नियमित व्यवस्था हेतु प्रार्थना-पत्र।

Step 2: पहले अनुच्छेद में परिचय और प्रस्ताव दीजिए।
अपना परिचय देकर तुरंत मुख्य बात पर आइए, कि विद्यालय में योग की नियमित कक्षाएँ आरंभ की जाएँ।

Step 3: दूसरे अनुच्छेद में कारण और लाभ बताइए।
योग से शारीरिक स्वास्थ्य सुधरता है, मन एकाग्र होता है, परीक्षा का तनाव घटता है और पढ़ाई में मन लगता है। लंबे समय तक बैठे रहने से होने वाली समस्याएँ भी दूर होती हैं।

Step 4: तीसरे अनुच्छेद में विनम्र निवेदन कीजिए।
सप्ताह में कुछ निश्चित दिन और समय तय करने का सुझाव दीजिए, फिर धन्यवाद के साथ पत्र समाप्त कीजिए।

Final Answer:
सेवा में,
प्रधानाचार्य महोदय,
अ.ब.स. विद्यालय,
नई दिल्ली

विषय : विद्यालय में योग कक्षाओं की नियमित व्यवस्था हेतु प्रार्थना-पत्र

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय की दसवीं कक्षा का विद्यार्थी शोभित हूँ। मैं विद्यार्थियों की ओर से यह निवेदन करना चाहता हूँ कि विद्यालय में योग की कक्षाओं की नियमित व्यवस्था की जाए।

आजकल विद्यार्थियों को घंटों बैठकर पढ़ना पड़ता है, जिससे थकान, कमर दर्द और तनाव की शिकायत रहती है। योग से शरीर स्वस्थ रहता है, मन एकाग्र होता है और परीक्षा का तनाव भी कम होता है। इससे पढ़ाई में भी मन अधिक लगेगा।

अतः आपसे विनम्र निवेदन है कि सप्ताह में कम से कम तीन दिन प्रातःकाल योग कक्षा की व्यवस्था कराने की कृपा करें। हम सभी विद्यार्थी आपके आभारी रहेंगे।

सधन्यवाद

आपका आज्ञाकारी शिष्य
शोभित
कक्षा दसवीं 'अ'
दिनांक : 7 मार्च 2026

Quick Tip: औपचारिक पत्र का पूरा प्रारूप लिखिए, सेवा में से लेकर दिनांक तक। मुख्य भाग को तीन अनुच्छेदों में बाँटिए, परिचय, कारण-लाभ और प्रार्थना।

62. निम्नलिखित विषय पर लगभग 100 शब्दों में औपचारिक पत्र लिखिए :

आप शोभा/शोभित हैं। अपने क्षेत्र में पेय जल के बढ़ते संकट की ओर ध्यान दिलाने के लिए किसी दैनिक समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

Concept:

- संपादक के नाम पत्र का उद्देश्य होता है किसी समस्या को जनता और अधिकारियों तक पहुँचाना, इसलिए इसमें प्रकाशन का निवेदन आवश्यक है।
- प्रारूप में सेवा में, संपादक महोदय, समाचार-पत्र का नाम और पता, विषय, संबोधन, मुख्य भाग, तथा अंत में नाम-पता आता है।

Step 1: विषय पंक्ति लिखिए।

विषय ऐसा हो जिससे समस्या तुरंत स्पष्ट हो, जैसे – क्षेत्र में पेय जल के बढ़ते संकट की ओर ध्यान आकर्षित करने हेतु।

Step 2: पहले अनुच्छेद में प्रकाशन का निवेदन कीजिए।
'आपके लोकप्रिय समाचार-पत्र के माध्यम से मैं संबंधित अधिकारियों का ध्यान इस ओर दिलाना चाहता हूँ', इस प्रकार की पंक्ति से आरंभ कीजिए।

Step 3: दूसरे अनुच्छेद में समस्या का ठोस वर्णन कीजिए।
अनियमित जलापूर्ति, दूषित पानी, हैंडपंपों का सूखना, लोगों का दूर से पानी लाना और गर्मियों में स्थिति का और बिगड़ना। ठोस विवरण से पत्र प्रभावी बनता है।

Step 4: तीसरे अनुच्छेद में माँग और आभार लिखिए।
नियमित जलापूर्ति, पाइपलाइन की मरम्मत और जल-शुद्धिकरण की व्यवस्था की माँग कीजिए, फिर धन्यवाद के साथ समाप्त कीजिए।

Final Answer:
सेवा में,
संपादक महोदय,
दैनिक जागरण,
नई दिल्ली

विषय : क्षेत्र में पेय जल के बढ़ते संकट की ओर ध्यान आकर्षित करने हेतु

महोदय,

आपके लोकप्रिय समाचार-पत्र के माध्यम से मैं संबंधित अधिकारियों का ध्यान हमारे क्षेत्र की एक गंभीर समस्या की ओर दिलाना चाहती हूँ।

पिछले कई महीनों से हमारे क्षेत्र में जलापूर्ति अत्यंत अनियमित हो गई है। कभी-कभी तो दो-दो दिन तक नल में पानी नहीं आता। जो पानी आता है वह भी प्रायः गंदा और बदबूदार होता है, जिससे बीमारियों का भय बना रहता है। भू-जल स्तर गिरने से

अनेक हैंडपंप सूख चुके हैं और लोगों को दूर से पानी ढोकर लाना पड़ता है। गर्मियों में यह संकट और भी विकराल हो जाता है।

अतः प्रशासन से अनुरोध है कि नियमित जलापूर्ति, पुरानी पाइपलाइनों की मरम्मत तथा जल-शुद्धिकरण की उचित व्यवस्था शीघ्र कराई जाए।

सधन्यवाद

भवदीया
शोभा
12, गाँधी नगर, नई दिल्ली
दिनांक : 7 मार्च 2026

Quick Tip: संपादक के नाम पत्र में पहली पंक्ति में ही समाचार-पत्र के माध्यम से ध्यान दिलाने की बात लिखिए। समस्या के ठोस ब्यौरे दीजिए और अंत में दो-तीन स्पष्ट माँगें रखिए।

63. निम्नलिखित विषय पर लगभग 40 शब्दों में विज्ञापन लिखिए :

'स्वदेशी अपनाओ, आत्मनिर्भर बनो' – स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग के प्रति जन-जागरूकता के लिए एक आकर्षक विज्ञापन तैयार कीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

Concept:

- यह जन-जागरूकता वाला विज्ञापन है, इसलिए इसका उद्देश्य वस्तु बेचना नहीं, बल्कि लोगों की सोच बदलना है।
- विज्ञापन में आकर्षक शीर्षक, छोटे-छोटे वाक्य, नारा और अंत में आह्वान होना चाहिए।

Step 1: बड़ा और आकर्षक शीर्षक चुनिए।
शीर्षक ऐसा हो जो एक नजर में पढ़ा जाए और मन पर असर छोड़े। दिया गया वाक्य स्वयं एक अच्छा शीर्षक है।

Step 2: दो-तीन छोटे कारण दीजिए।
स्वदेशी अपनाने से देश का धन देश में रहता है, स्थानीय कारीगरों को रोजगार मिलता है और देश आत्मनिर्भर बनता है। इन्हें एक-एक पंक्ति में लिखिए।

Step 3: बीच में एक नारा जोड़िए।
छोटा और लयबद्ध नारा विज्ञापन को याद रखने योग्य बना देता है।

Step 4: अंत में आह्वान रखिए।
पाठक से सीधे कुछ करने को कहिए, जैसे आज ही स्वदेशी चुनें। शब्द-सीमा 40 के आसपास ही रखिए।

Final Answer:

स्वदेशी अपनाओ, आत्मनिर्भर बनो

जो आप खरीदते हैं, वह तय करता है कि किसका घर चलेगा।
• स्वदेशी खरीदें, देश का धन देश में रखें
• हर खरीद से मिले किसी कारीगर को रोजगार
• गुणवत्ता में भी अब कोई कमी नहीं

“देश का सामान, देश की शान”

आइए, आज से हर खरीद में स्वदेशी को पहला स्थान दें।

Quick Tip: विज्ञापन को बॉक्स में लिखिए। ऊपर बड़ा शीर्षक, बीच में दो-तीन छोटे बिंदु,

फिर एक नारा और अंत में पाठक से कुछ करने का आह्वान।

64. निम्नलिखित विषय पर लगभग 40 शब्दों में विज्ञापन लिखिए :

मिट्टी के बर्तन बनाने वाली कंपनी 'विरासत' की ओर से अपने उत्पादों की जानकारी देने तथा बिक्री बढ़ाने के लिए एक आकर्षक विज्ञापन तैयार कीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

Concept:

- यह व्यावसायिक विज्ञापन है, इसलिए इसमें कंपनी का नाम, उत्पाद, विशेषताएँ, कोई विशेष छूट और संपर्क सूत्र आना चाहिए।
- जन-जागरूकता वाले विज्ञापन से यह इसी बात में अलग है कि यहाँ बिक्री बढ़ाना उद्देश्य है।

Step 1: कंपनी का नाम प्रमुखता से रखिए।
सबसे ऊपर बड़े अक्षरों में 'विरासत' लिखिए और साथ में एक छोटी पंक्ति जोड़िए जो उसकी पहचान बताए।

Step 2: उत्पाद गिनाइए।
मिट्टी के घड़े, सुराही, हांडी, तवा, कुल्हड़, गमले और सजावटी वस्तुएँ। नाम गिनाने से ग्राहक को पता चलता है कि क्या मिलेगा।

Step 3: विशेषताएँ बताइए।
मिट्टी के बर्तनों की अपनी खूबियाँ हैं, जैसे पानी का प्राकृतिक रूप से ठंडा रहना, भोजन का स्वाद बढ़ना और पर्यावरण के अनुकूल होना। ये ही ग्राहक को आकर्षित करती हैं।

Step 4: छूट और संपर्क सूत्र जोड़िए।
कोई विशेष छूट और पता या फोन नंबर अवश्य दीजिए, अन्यथा विज्ञापन अधूरा रह जाता है।

Final Answer:

विरासत

मिट्टी की सोंधी खुशबू, सेहत के साथ

घड़ा • सुराही • हांडी • तवा • कुल्हड़ • गमले

• बिना बिजली के पानी रहे प्राकृतिक रूप से ठंडा
• मिट्टी की हांडी में पका भोजन, स्वाद दुगुना
• पूर्णतः पर्यावरण-अनुकूल, हाथ से निर्मित

इस माह 20% की विशेष छूट

संपर्क : विरासत मृद्भांड, मुख्य बाजार • दूरभाष : 98XXXXXX10

Quick Tip: विज्ञापन में कंपनी का नाम, उत्पादों की छोटी सूची, दो-तीन विशेषताएँ, कोई छूट और संपर्क सूत्र अवश्य दीजिए। विशेषता को ग्राहक के लाभ के रूप में लिखिए।

65. निम्नलिखित विषय पर लगभग 60 शब्दों में सूचना लिखिए :

आप स्वयंसेवी संस्था 'रोशनी' की/के अध्यक्ष प्रणीति/प्रणीष हैं। 'विश्व तंबाकू निषेध दिवस' के अवसर पर मादक द्रव्यों से होने वाले नुकसान के प्रति आम लोगों को जागरूक करने के लिए संस्था द्वारा एक कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। जन साधारण को इस बात की जानकारी देने के लिए एक सूचना तैयार कीजिए।

Correct Answer: –

Solution:

Concept:

- सूचना का काम है आवश्यक जानकारी संक्षेप में देना। इसमें भावुक भाषा या विस्तार की आवश्यकता नहीं होती।
- हर सूचना में पाँच बातें अवश्य होनी चाहिए – क्या, कब, कहाँ, किसके लिए और संपर्क।

Step 1: सूचना का ढाँचा तय कीजिए।
सबसे ऊपर संस्था का नाम, फिर बीच में बड़े अक्षरों में 'सूचना', फिर दिनांक, फिर विषय, फिर मुख्य भाग, और अंत में नाम तथा पद।

Step 2: मुख्य भाग में पाँचों बातें भरिए।
कार्यशाला क्या है, किस दिन और किस समय होगी, कहाँ होगी, कौन भाग ले सकता है, और किससे संपर्क करना है।

Step 3: भाषा सीधी रखिए।
सूचना में लंबे वाक्य और अलंकार नहीं चाहिए। छोटे और स्पष्ट वाक्य ही उपयुक्त हैं।

Step 4: पूरी सूचना को बॉक्स में रखिए।
बॉक्स में लिखने से वह सूचना जैसी दिखती है और प्रारूप के अंक सुरक्षित रहते हैं।

Final Answer:

स्वयंसेवी संस्था 'रोशनी'

सूचना

दिनांक : 25 मई 2026

विषय : विश्व तंबाकू निषेध दिवस पर जागरूकता कार्यशाला

जन साधारण को सूचित किया जाता है कि 'विश्व तंबाकू निषेध दिवस' के अवसर पर संस्था द्वारा एक जागरूकता कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें तंबाकू तथा अन्य मादक द्रव्यों से होने वाले दुष्प्रभावों पर चिकित्सक एवं विशेषज्ञ अपने विचार रखेंगे।

दिनांक : 31 मई 2026 **समय :** प्रातः 10:00 बजे
स्थान : सामुदायिक भवन, गाँधी नगर
प्रवेश निःशुल्क। सभी आयु वर्ग के नागरिक आमंत्रित हैं।

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें : 98XXXXXX22

प्रणीति
अध्यक्ष, 'रोशनी'

Quick Tip: सूचना में पाँच बातें अवश्य दीजिए, क्या आयोजन है, कब, कहाँ, किसके लिए और संपर्क किससे करें। दिनांक, समय और स्थान अलग-अलग पंक्तियों में लिखिए।

66. निम्नलिखित विषय पर लगभग 60 शब्दों में सूचना लिखिए :

आप अ.ब.स. विद्यालय के वरिष्ठ विज्ञान अध्यापिका/अध्यापक प्रणीति/प्रणीष हैं। आपके विद्यालय में 'राष्ट्रीय विज्ञान दिवस' के अवसर पर विज्ञान मेले का आयोजन होने वाला है। इस बारे में सभी विद्यार्थियों को जानकारी देने के लिए एक सूचना तैयार कीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

Concept:

- विद्यालय की सूचना का पाठक विद्यार्थी होता है, इसलिए उसमें यह भी बताना चाहिए कि उसे करना क्या है, जैसे नाम कहाँ लिखवाना है।
- ढाँचा वही रहता है – विद्यालय का नाम, सूचना, दिनांक, विषय, मुख्य भाग, नाम और पद।

Step 1: शीर्ष भाग लिखिए।
ऊपर विद्यालय का नाम, फिर बीच में 'सूचना', फिर दिनांक।

Step 2: आयोजन की जानकारी दीजिए।
बताइए कि राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के अवसर पर विज्ञान मेले का आयोजन हो रहा है और उसमें क्या-क्या होगा, जैसे मॉडल प्रदर्शनी, प्रयोग और प्रश्नोत्तरी।

Step 3: दिनांक, समय और स्थान अलग पंक्तियों में लिखिए।
इन्हें स्पष्ट दिखने दीजिए, ताकि विद्यार्थी एक नजर में पढ़ सकें।

Step 4: भाग लेने का तरीका बताइए।
यह लिखना आवश्यक है कि इच्छुक विद्यार्थी किस तारीख तक और किसके पास नाम लिखवाएँ। इसी से सूचना अपना उद्देश्य पूरा करती है।

Final Answer:

अ.ब.स. विद्यालय, नई दिल्ली

सूचना

दिनांक : 20 फरवरी 2026

विषय : राष्ट्रीय विज्ञान दिवस पर विज्ञान मेले का आयोजन

समस्त विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि 'राष्ट्रीय विज्ञान दिवस' के अवसर पर विद्यालय में विज्ञान मेले का आयोजन किया जा रहा है। इसमें विज्ञान मॉडल

प्रदर्शनी, प्रयोग प्रदर्शन तथा विज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता सम्मिलित होंगी। श्रेष्ठ प्रविष्टियों को पुरस्कृत किया जाएगा।

दिनांक : 28 फरवरी 2026
समय : प्रातः 9:00 बजे से अपराह्न 1:00 बजे तक
स्थान : विद्यालय का मुख्य सभागार एवं विज्ञान प्रयोगशाला

इच्छुक विद्यार्थी 25 फरवरी तक अपने विज्ञान अध्यापक के पास अपना नाम लिखवा दें।

प्रणीति
वरिष्ठ विज्ञान अध्यापिका

Quick Tip: सूचना के दो भाग रखिए, पहले आयोजन की जानकारी और फिर विद्यार्थियों के लिए निर्देश कि नाम कब तक और किसके पास लिखवाना है।